मन की बात

2025: भारत का वैश्विक प्रभाव और राष्ट्रीय गौरव का वर्ष

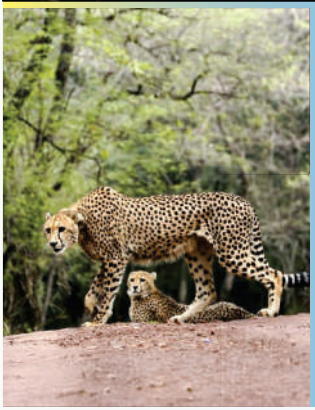

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का संदेश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

24 **युवा नेतृत्व संवाद 2.0** : विचारों और नवाचार के माध्यम से विकसित भारत का निर्माण

40 **पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना** : बदलती ज़िंदगियाँ

48 **काशी से फ़िजी को जोड़ती तमिल**

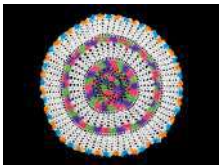

60 **परम्परा से परिवर्तन तक** : समुदायों को सशक्त बनाते भारतीय कला और कौशल

64 **रण उत्सव** : भारत की जीवंत संस्कृति का जश्न

संक्षेप में

20 **2025 पर एक नज़र**

54 **पार्वती गिरि** : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम ओड़िया नायिका

लेख

28 **स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2025** : एक ऐसा मंच जहाँ अग्रणी है युवा भारत – डॉ. अभय जेरे

32 **गीतांजलि IISc** : प्यार बिखेरता संगीत ग्रुप – प्रो. गोविंदन रंगराजन

36 **कन्नड पाठशाले** : सीमाओं से परे भाषा, जड़ें और पहचान – शशिधर नागराजप्पा

44 **फावड़े का प्रथम प्रहार** : जेहानपोरा, बारामूला (जम्मू और कश्मीर) में पुरातात्विक खुदाई – कुलदीप कृष्ण सिद्धा (JKAS)

56 एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग में सावधानी और उत्तरदायित्व की अपील – डॉ. राजीव बहल

69 **प्रतिक्रियाएँ**

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' में आपका फिर से स्वागत है, अभिनंदन है। कुछ ही दिनों में साल 2026 दस्तक देने वाला है, और आज, जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ, तो मन में पूरे एक साल की यादें घूम रही हैं – कई तस्वीरें, कई चर्चाएँ, कई उपलब्धियाँ, जिन्होंने देश को एक साथ जोड़ दिया। **2025 ने हमें ऐसे कई पल दिए, जिन पर हर भारतीय को गर्व हुआ। देश की सुरक्षा से लेकर खेल के मैदान तक, विज्ञान की प्रयोगशालाओं से लेकर दुनिया के बड़े मंचों तक। भारत ने हर जगह अपनी मज़बूत छाप छोड़ी। इस साल 'ऑपरेशन सिंदूर' हर भारतीय के लिए गर्व का प्रतीक बन गया।** दुनिया ने साफ देखा आज का भारत अपनी सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करता। 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान देश के कोने-कोने से माँ भारती के प्रति प्रेम और समर्पण की तस्वीरें सामने आई। लोगों ने अपने-अपने तरीके से अपने भाव व्यक्त किए।

साथियो, यही जज़्बा तब भी देखने को मिला, जब 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे हुए। मैंने आपसे आग्रह किया था कि '#VandeMataram150' के साथ अपने संदेश और सुझाव भेजें। देशवासियों ने इस अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

साथियो, 2025 खेल के लिहाज़ से भी एक यादगार साल रहा। हमारी पुरुष Cricket team ने ICC

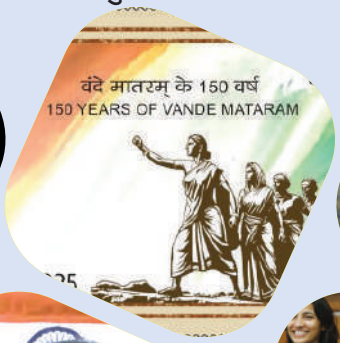

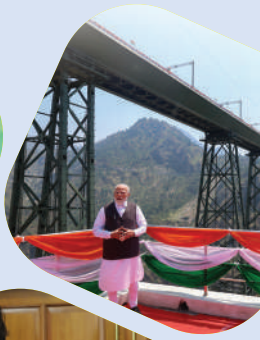

Champions Trophy जीती। महिला **Cricket team** ने पहली बार विश्व कप अपने नाम किया। भारत की बेटियों ने **Women's Blind T20 World Cup** जीतकर इतिहास रच दिया। एशिया कप **T20** में भी तिरंगा शान से लहराया। पैरा एथलीटों ने विश्व **Championship** में कई पदक जीतकर ये साबित किया कि कोई बाधा हौसलों को नहीं रोक सकती। विज्ञान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी भारत ने बड़ी छलांग लगाई। शुभांशु शुक्ला पहले भारतीय बने, जो **International Space Station** तक पहुँचे। पर्यावरण संरक्षण और वन्य-जीवों की सुरक्षा से जुड़े कई प्रयास भी 2025 की पहचान बने। भारत में चीतों की संख्या भी अब 30 से ज़्यादा हो गई है। 2025 में आस्था, संस्कृति और भारत की अद्वितीय विरासत सब एक साथ दिखाई दी। साल के शुरुआत में प्रयागराज महाकुंभ के आयोजन ने पूरी दुनिया को चकित किया। साल के अंत में अयोध्या में राम मंदिर पर ध्वजारोहण के कार्यक्रम ने हर भारतीय को गर्व से भर दिया। स्वदेशी को लेकर भी लोगों का उत्साह खूब दिखाई दिया। लोग वही सामान खरीद रहे हैं, जिसमें किसी भारतीय का पसीना लगा हो और जिसमें भारत की मिट्टी की सुगंध हो। आज हम गर्व से कह सकते हैं- 2025 ने भारत को और अधिक आत्मविश्वास दिया है। ये बात भी सही है इस वर्ष प्राकृतिक आपदाएँ हमें झेलनी पड़ी, अनेक क्षेत्रों में झेलनी पड़ी। अब देश 2026 में नई उम्मीदों,

नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ने को तैयार है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज दुनिया भारत को बहुत आशा के साथ देख रही है। भारत से उम्मीद की सबसे बड़ी वजह है, हमारी युवा शक्ति। विज्ञान के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियाँ, नए-नए innovation, technology का विस्तार इनसे दुनियाभर के देश बहुत प्रभावित हैं।

साथियो, भारत के युवाओं में हमेशा कुछ नया करने का जुनून है और वो उतने ही जागरूक भी हैं। मेरे युवा साथी कई बार मुझसे यह पूछते हैं कि nation building में वो अपना योगदान और कैसे बढ़ाएँ? वो कैसे अपने ideas share कर सकते हैं? कई साथी पूछते हैं कि मेरे सामने वो अपने ideas का presentation कैसे दे सकते हैं? **हमारे युवा साथियों की इस जिज्ञासा का समाधान है 'Viksit Bharat Young Leaders Dialogue'। पिछले साल इसका पहला edition हुआ था, अब कुछ दिन बाद उसका दूसरा edition होने वाला है। अगले महीने की 12 तारीख को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के अवसर पर 'राष्ट्रीय युवा दिवस' मनाया जाएगा।** इसी दिन 'Young Leaders Dialogue' का भी आयोजन होगा और मैं भी इसमें जरूर शामिल होऊँगा। इसमें हमारे युवा Innovation, Fitness, Startup और Agriculture जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने ideas share करेंगे। मैं इस कार्यक्रम को लेकर बहुत ही उत्सुक हूँ।

साथियो, मुझे ये देखकर अच्छा लगा कि इस कार्यक्रम में हमारे युवाओं की भागीदारी बढ़ रही है। कुछ दिनों पहले ही इससे जुड़ा एक quiz competition हुआ। इसमें 50 लाख से अधिक युवा शामिल हुए। एक निबंध प्रतियोगिता भी हुई जिसमें students ने विभिन्न विषयों पर अपनी बातें रखीं। इस प्रतियोगिता में तमिलनाडु पहले और उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर रहा।

साथियो, आज देश के भीतर युवाओं को प्रतिभा दिखाने के नए-नए अवसर मिल रहे हैं। ऐसे बहुत से platforms विकसित हो रहे हैं, जहाँ युवा अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार talent

दिखा सकते हैं। ऐसा ही एक platform है– 'Smart India Hackathon' एक और ऐसा माध्यम जहाँ ideas, action में बदलते हैं।

साथियो, 'Smart India Hackathon 2025' का समापन इसी महीने हुआ है। इस **Hackathon** के दौरान 80 से अधिक सरकारी विभागों की 270 से ज़्यादा समस्याओं पर **students** ने काम किया। **Students** ने ऐसे **solution** दिए, जो **real life challenges** से जुड़े थे। जैसे **traffic** की समस्या है। इसे लेकर युवाओं ने 'Smart Traffic Management' से जुड़े बहुत ही interesting perspective share किए। Financial Frauds और Digital Arrests जैसी चुनौतियों के समाधान पर भी युवाओं ने अपने ideas सामने रखे। गाँवों में digital banking के लिए Cyber Security Framework पर सुझाव दिया। कई युवा agriculture sector की चुनौतियों के समाधान में जुटे रहे। **साथियो, पिछले 7-8 साल में 'Smart India Hackathon' में, 13 लाख से ज़्यादा students और 6 हजार से ज़्यादा Institutes हिस्सा ले चुके हैं।** युवाओं ने सैंकड़ों problems के सटीक solutions भी दिए हैं। इस तरह के Hackathons का आयोजन समय-समय पर होता रहता है। मेरा अपने युवा साथियों से आग्रह है कि वे इन Hackathons का हिस्सा ज़रूर बनें।

गीतांजलि IISc के 10वें वर्षगाँठ समारोह की झलक

साथियो, आज का जीवन Tech-Driven होता जा रहा है और जो परिवर्तन सदियों में आते थे, वो बदलाव हम कुछ बरसों में होते देख रहे हैं। कई बार तो कुछ लोग चिंता जताते हैं कि Robots कहीं मनुष्यों को ही न Replace कर दें। ऐसे बदलते समय में Human Development के लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहना बहुत जरूरी है। मुझे ये देखकर बहुत खुशी होती है कि हमारी अगली पीढ़ी अपनी संस्कृति की जड़ों को अच्छी तरह थाम रही है – नई सोच के साथ नए तरीकों के साथ।

साथियो, आपने **Indian Institute of Science उसका नाम तो ज़रूर सुना होगा। Research और Innovation इस संस्थान की पहचान है। कुछ साल पहले वहाँ के कुछ छात्रों ने महसूस किया कि पढ़ाई और Research के बीच संगीत के लिए भी जगह होनी चाहिए।** बस यहीं से एक छोटी-सी Music Class शुरू हुई। **ना बड़ा मंच, ना कोई बड़ा बजट। धीरे-धीरे ये पहल बढ़ती गई और आज इसे हम 'Geetanjali IISc' के नाम से जानते हैं। यह अब सिर्फ एक Class नहीं, Campus का सांस्कृतिक केंद्र है।** यहाँ हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत है, लोक परम्पराएँ हैं, शास्त्रीय विधाएँ हैं, छात्र यहाँ साथ बैठकर रियाज़ करते हैं। Professor साथ बैठते हैं, उनके परिवार भी जुड़ते हैं। आज दो-सौ से ज़्यादा लोग इससे जुड़े हैं। और खास बात ये कि जो विदेश चले गए, वो भी Online जुड़कर इस Group की डोर थामे हुए हैं।

साथियो, अपनी जड़ों से जुड़े रहने के ये प्रयास सिर्फ भारत तक सीमित नहीं हैं। दुनिया के अलग-अलग कोनों और वहाँ बसे भारतीय भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। एक और उदाहरण जो हमें देश से बाहर ले जाता है – ये जगह है 'दुबई'। वहाँ रहने वाले कन्नड़ा परिवारों ने खुद से एक ज़रूरी सवाल पूछा –

हमारे बच्चे Tech-World में आगे तो बढ़ रहे हैं, लेकिन कहीं वो अपनी भाषा से दूर तो नहीं हो रहे हैं? **यहीं से जन्म हुआ 'कन्नड़ा पाठशाले' का। एक ऐसा प्रयास, जहाँ बच्चों को 'कन्नड़ा' पढ़ाना, सीखना, लिखना और बोलना सिखाया जाता है। आज इससे एक हज़ार से ज़्यादा बच्चे जुड़े हैं। वाकई, कन्नड़ा नाडु, नुडी नम्मा हेम्मे। कन्नड़ा की भूमि और भाषा, हमारा गर्व है।**

साथियो, एक पुरानी कहावत है 'जहाँ चाह, वहाँ राह'। इस कहावत को फिर से सच कर दिखाया है मणिपुर के एक युवा मोइरांगथेम सेठ जी ने। उनकी उम्र 40 साल से भी कम है। श्रीमान् मोइरांगथेम जी मणिपुर के जिस दूर-सुदूर क्षेत्र में रहते थे, वहाँ बिजली की बड़ी समस्या थी। इस चुनौती से निपटने के लिए उन्होंने Local Solution पर ज़ोर दिया और उन्हें ये Solution मिला Solar Power में। हमारे मणिपुर में वैसे भी Solar Energy पैदा करना आसान है। तो मोइरांगथेम ने Solar Panel लगाने का अभियान चलाया और इस अभियान की वजह से आज उनके क्षेत्र के सैकड़ों घरों में Solar Power पहुँच गई है। खास बात ये है कि उन्होंने Solar Power का उपयोग Health-Care और आजीविका को बेहतर बनाने के लिए किया है। आज उनके प्रयासों से मणिपुर में कई Health Centers को भी Solar Power मिल रही है। उनके इस काम से मणिपुर की नारी-शक्ति को भी बहुत लाभ मिला है। स्थानीय मछुआरों और कलाकारों को भी इससे मदद मिली है।

साथियो, **आज सरकार 'PM सूर्य घर मुफ़्त बिजली योजना' के तहत हर लाभार्थी परिवार को Solar Panel लगाने के लिए करीब-करीब 75 से 80 हज़ार रुपये दे रही है।** मोइरांगथेम जी के ये प्रयास यूँ तो व्यक्तिगत प्रयास

हैं, लेकिन Solar Power से जुड़े हर अभियान को नई गति दे रहे हैं। मैं 'मन की बात' के माध्यम से उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आइए अब ज़रा हम जम्मू-कश्मीर की तरफ चलते हैं। जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत, उसकी एक ऐसी गाथा साझा करना चाहता हूँ, जो आपको गर्व से भर देगी। **जम्मू-कश्मीर के बारामूला में, ज़ेहनपोरा नाम की एक जगह है। वहाँ लोग बरसों से कुछ ऊँचे-ऊँचे टीले देखते आ रहे थे।** साधारण से टीले किसी को नहीं पता था कि ये क्या है? फिर एक दिन Archaeologist की नज़र इन पर पड़ी। जब उन्होंने इस इलाके को ध्यान से देखना शुरू किया, तो ये टीले कुछ अलग लगे। इसके बाद इन टीलों का वैज्ञानिक अध्ययन शुरू किया गया। ड्रोन के ज़रिए ऊपर से तस्वीरें ली गईं, ज़मीन की Mapping की गई। और फिर कुछ हैरान करने वाली बातें सामने आने लगी। पता चला ये टीले प्राकृतिक नहीं हैं। ये इंसान द्वारा बनाई गई किसी बड़ी इमारत के अवशेष हैं। इसी दौरान एक और दिलचस्प कड़ी जुड़ी। **कश्मीर से हज़ारों किलोमीटर दूर, फ्रांस के एक Museum के Archives में एक पुराना, धुंधला-सा चित्र मिला। बारामूला के उस चित्र में तीन बौद्ध स्तूप नज़र आ रहे थे। यहीं से समय ने करवट ली और कश्मीर का एक गौरवशाली अतीत हमारे सामने आया। ये करीब दो हज़ार साल पुराना इतिहास है। कश्मीर के ज़ेहनपोरा का ये बौद्ध परिसर हमें याद दिलाता है, कश्मीर का अतीत क्या था, उसकी पहचान कितनी समृद्ध थी।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपसे भारत से हज़ारों किलोमीटर दूर, एक

ज़ेहानपोरा, बारामूला, जम्मू और कश्मीर में साइट

फ़िजी से काशी : प्राचीन तमिल सीखती नई पीढ़ी

ऐसे प्रयास की बात करना चाहता हूँ, जो दिल को छू लेने वाला है। **Fiji में भारतीय भाषा और संस्कृति के प्रसार के लिए एक सराहनीय पहल हो रही है। वहाँ की नई पीढ़ी को तमिल भाषा से जोड़ने के लिए कई स्तरों पर लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। पिछले महीने Fiji के राकी-राकी इलाके में वहाँ के एक स्कूल में पहली बार तमिल दिवस मनाया गया।** उस दिन बच्चों को एक ऐसा मंच मिला, जहाँ उन्होंने अपनी भाषा पर खुले दिल से गौरव व्यक्त किया। बच्चों ने तमिल में कविताएँ सुनाई, भाषण दिए और अपनी संस्कृति को पूरे आत्मविश्वास के साथ मंच पर उतारा।

साथियो, देश के भीतर भी तमिल भाषा के प्रचार के लिए लगातार काम हो रहा है। कुछ दिन पहले ही मेरे संसदीय क्षेत्र काशी में चौथा 'काशी तमिल संगमम' हुआ। अब मैं आपको एक audio clip सुनाने जा रहा हूँ। आप सुनिए और अंदाज़ा लगाइए तमिल बोलने की कोशिश कर रहे ये बच्चे कहाँ के हैं?

साथियो, आपको जानकार हैरानी होगी तमिल भाषा में इतनी सहजता से अपनी बात रखने वाले ये बच्चे काशी के हैं, वाराणसी के हैं। इनकी मातृभाषा हिंदी है लेकिन तमिल भाषा के प्रति लगाव ने इन्हें तमिल सीखने के लिए प्रेरित किया है। **इस साल वाराणसी में 'काशी तमिल संगमम' के दौरान तमिल सीखने पर खास ज़ोर दिया गया था।**

Learn Tamil–'तमिल करकलम' इस Theme के तहत वाराणसी के 50 से ज़्यादा स्कूलों में विशेष अभियान भी चलाए गए। इसी का नतीजा हमें इस audio clip में सुनाई देता है।

साथियो, तमिल भाषा दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। तमिल साहित्य भी अत्यंत समृद्ध है। मैंने 'मन की बात' में 'काशी तमिल संगमम' में भाग लेने का आग्रह किया था। **मुझे खुशी है कि आज देश के दूसरे हिस्सों में भी बच्चों और युवाओं के बीच तमिल भाषा को लेकर नया आकर्षण दिख रहा है - यही भाषा की ताकत है, यही भारत की एकता है।**

साथियो, **अगले महीने हम देश का 77वाँ गणतंत्र दिवस मनाएँगे। जब भी ऐसे अवसर आते हैं, तो हमारा मन स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं के प्रति कृतज्ञता के भाव से भर जाता है।** हमारे देश ने आज़ादी पाने के लिए लम्बा संघर्ष किया है। आज़ादी के आंदोलन में देश के हर हिस्से के लोगों ने अपना योगदान दिया है। लेकिन, दुर्भाग्य से आज़ादी के अनेकों नायक-नायिकाओं को वो सम्मान नहीं मिला, जो उन्हें मिलना चाहिए था। **ऐसी ही एक स्वतंत्रता सेनानी हैं- ओडिशा की पार्वती गिरि जी। जनवरी 2026 में उनकी जन्म-शताब्दी मनाई जाएगी। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में हिस्सा लिया था। साथियो, आज़ादी के आंदोलन के बाद पार्वती गिरि जी ने अपना जीवन समाज सेवा और जनजातीय कल्याण को समर्पित कर दिया था। उन्होंने कई अनाथालयों की स्थापना की। उनका प्रेरक जीवन हर पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा।**

"मूँ पार्वती गिरि जिंकु श्रद्धांजलि अर्पण करुछी"

(मैं पार्वती गिरी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ)

साथियो, ये हमारा दायित्व है कि हम अपनी विरासत को ना भूलें| हम आज़ादी दिलाने वाले नायक-नायिकाओं की महान गाथा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाएं। आपको याद होगा, जब हमारी आज़ादी के 75 वर्ष हुए थे, तब सरकार ने एक विशेष website तैयार की थी।

बिना डॉक्टर की सलाह दवा न लें, खासकर एंटीबायोटिक

इसमें एक विभाग 'Unsung Heroes' को समर्पित किया गया था। आज भी आप इस website पर visit करके उन महान विभूतियों के बारे में जान सकते हैं जिनकी देश को आज़ादी दिलाने में बहुत बड़ी भूमिका रही है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के ज़रिए हमें समाज की भलाई से जुड़े महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने का एक बहुत अच्छा अवसर मिलता है। **आज मैं एक ऐसे मुद्दे पर बात करना चाहता हूँ, जो हम सभी के लिए चिंता का विषय बन गया है। ICMR यानी Indian Council of Medical Research ने हाल ही में एक report जारी की है। इसमें बताया गया है कि निमोनिया और UTI जैसी कई बीमारियों के खिलाफ antibiotic दवाएँ कमज़ोर साबित हो रही हैं।** हम सभी के लिए यह बहुत ही चिंताजनक है। रिपोर्ट के मुताबिक इसका एक बड़ा कारण लोगों द्वारा बिना सोचे-समझे antibiotic दवाओं का सेवन है। antibiotic ऐसी दवाएँ नहीं हैं, जिन्हें यूँ ही ले लिया जाए। इनका इस्तेमाल Doctor की सलाह से ही करना चाहिए। **आजकल लोग ये मानने लगे हैं कि बस एक गोली ले लो, हर तकलीफ दूर हो जाएगी। यही वजह है कि बीमारियाँ और संक्रमण इन antibiotic दवाओं पर भारी पड़ रहे हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि कृपया अपनी मनमर्ज़ी से दवाओं का इस्तेमाल करने से बचें। Antibiotic दवाओं के मामले में तो इस बात का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। मैं तो यही कहूँगा - Medicines के लिए Guidance और Antibiotics के लिए Doctors की ज़रूरत है।** यह आदत आपकी सेहत को बेहतर बनाने में बहुत मददगार साबित होने वाली है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारी पारम्परिक कलाएँ समाज को सशक्त

करने के साथ ही लोगों की आर्थिक प्रगति का भी बड़ा माध्यम बन रही हैं। **आंध्र प्रदेश के नारसापुरम ज़िले की Lace Craft (लेस क्राफ्ट) की चर्चा अब पूरे देश में बढ़ रही है।** ये Lace Craft (लेस क्राफ्ट) कई पीढ़ियों से महिलाओं के हाथों में रही है। बहुत धैर्य और बारीकी के साथ देश की नारी-शक्ति ने इसका संरक्षण किया है। आज इस परम्परा को एक नए रंग-रूप के साथ आगे ले जाया जा रहा है। आंध्र प्रदेश सरकार और NABARD मिलकर कारीगरों को नए design सिखा रहे हैं, बेहतर skill training दे रहे हैं और नए बाज़ार से जोड़ रहे हैं। **नारसापुरम Lace को GI Tag भी मिला है । आज इससे 500 से ज़्यादा products बन रहे हैं और ढ़ाई-सौ से ज़्यादा गाँवों में करीब-करीब 1 लाख महिलाओं को इससे काम मिल रहा है।**

साथियो, 'मन की बात' ऐसे लोगों को सामने लाने का भी मंच है जो अपने परिश्रम से ना सिर्फ पारम्परिक कलाओं को आगे बढ़ा रहे हैं बल्कि इससे स्थानीय लोगों को सशक्त भी कर रहे हैं। मणिपुर के चुराचाँदपुर में Margaret Ramtharsiem जी उनके प्रयास ऐसे ही हैं। उन्होंने मणिपुर के पारम्परिक उत्पादों को, वहाँ के handicraft को, बाँस और लकड़ी से बनी चीजों को, एक बड़े vision के साथ देखा और इसी vision के कारण, वो एक handicraft artist से लोगों के जीवन को बदलने का माध्यम बन गईं। आज Margaret जी की unit उसमें 50 से ज़्यादा artist काम कर रहे हैं और उन्होंने अपनी मेहनत से दिल्ली समेत देश के कई राज्यों में, अपने products का एक market भी develop किया है।

साथियो, मणिपुर से ही एक और उदाहरण सेनापति जिले की रहने वाली चोखोने क्रिचेना जी का है। उनका पूरा परिवार परम्परागत खेती से जुड़ा रहा है। क्रिचेना ने इस पारम्परिक अनुभव को

सफेद रण में भव्य उत्सव

एक और विस्तार दिया। उन्होंने फूलों की खेती को अपना passion बनाया। आज वो इस काम से अलग-अलग markets को जोड़ रहीं हैं और अपने इलाके की local communities को भी Empower कर रही हैं। साथियो, ये उदाहरण इस बात का पर्याय है कि अगर पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक vision के साथ आगे बढ़ाएँ तो ये आर्थिक प्रगति का बड़ा माध्यम बन जाता है। आपके आसपास भी ऐसी success stories हों, तो मुझे जरूर share करिए।

साथियो, हमारे देश की सबसे खूबसूरत बात ये है कि सालभर हर समय देश के किसी-ना-किसी हिस्से में उत्सव का माहौल रहता है। अलग-अलग पर्व-त्योहार तो हैं ही, साथ ही विभिन्न राज्यों के स्थानीय उत्सव भी आयोजित होते रहते हैं। यानि, अगर आप घूमने का मन बनाएँ, तो हर समय, देश का कोई-ना-कोई कोना अपने unique उत्सव के साथ तैयार मिलेगा। ऐसा ही एक उत्सव इन दिनों कच्छ के रण में चल रहा है। **इस साल कच्छ रणोत्सव का ये आयोजन 23 नवम्बर से शुरू हुआ है, जो 20 फरवरी तक चलेगा। यहाँ कच्छ की लोक संस्कृति, लोक संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प की विविधता दिखाई देती है।** कच्छ के सफेद रण की भव्यता देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। रात के समय जब सफेद रण के ऊपर चाँदनी फैलती है, वहाँ का दृश्य अपने आप में मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता है। **रण उत्सव का Tent City बहुत लोकप्रिय है। मुझे जानकारी मिली है कि पिछले एक महीने में अब तक 2 लाख से ज़्यादा लोग रणोत्सव का हिस्सा बन चुके हैं और देश के कोने-कोने से आए हैं, विदेश से भी लोग आए हैं।** आपको जब भी अवसर मिले, तो ऐसे उत्सवों में जरूर शामिल हों और भारत की विविधता का आनंद उठाएँ।

साथियो, 2025 में 'मन की बात' का ये आखिरी episode है, अब हम साल

2026 में ऐसे ही उमंग और उत्साह के साथ, अपनेपन के साथ अपने 'मन की बातों' को करने के लिए 'मन की बात' के कार्यक्रम में जरूर जुड़ेंगे। नई ऊर्जा, नए विषय और प्रेरणा से भर देने वाली देशवासियों की अनगिनित गाथाओं 'मन की बात' में हम सबको जोड़ती है। हर महीने मुझे ऐसे अनेक संदेश मिलते हैं, जिसमें 'विकसित भारत' को लेकर लोग अपना vision साझा करते हैं। लोगों से मिलने वाले सुझाव और इस दिशा में उनके प्रयासों को देखकर ये विश्वास और मजबूत होता है और जब ये सब बातें मेरे तक पहुँचती हैं, तो 'विकसित भारत' का संकल्प जरूर सिद्ध होगा। ये विश्वास दिनों दिन मजबूत होता जाता है। साल 2026 इस संकल्प सिद्धि की यात्रा में एक अहम पड़ाव साबित हो, आपका और आपके परिवार का जीवन खुशहाल हो, इसी कामना के साथ इस episode में विदाई लेने से पहले मैं जरूर कहूँगा, 'Fit India Movement' आप को भी fit रहना है। ठंडी का ये मौसम व्यायाम के लिए बहुत उपयुक्त होता है, व्यायाम ज़रूर करें। आप सभी को 2026 की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। धन्यवाद। वंदे मातरम्।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

2025 पर एक नज़र

वर्ष 2025 पर एक नज़र डालें तो यह भारत के साहस, आत्मविश्वास, संस्कृति और सामूहिक उपलब्धियों की एक सशक्त गाथा के रूप में सामने आता है। राष्ट्रीय सुरक्षा सुदृढ़ करने से लेकर विज्ञान के नए क्षितिज तक पहुँचने, खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन से लेकर आध्यात्मिक भव्यता तक, भारत की यात्रा में ऐसे पड़ाव आए जिन्होंने हर नागरिक का हृदय गर्व से भर दिया। इस फ़ोटो फीचर में माननीय प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में स्मरण किए गए कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण दृश्य एक साथ प्रस्तुत किए गए हैं जिनमें भारत कहीं अधिक दृढ़ संकल्प और आशावाद के साथ 2026 में पदार्पण करता दिखाई देता है।

सुरक्षा, अंतरिक्ष और राष्ट्रीय विरासत

'ऑपरेशन सिंदूर' राष्ट्रीय सुरक्षा और माँ भारती के प्रति सामूहिक समर्पण का एक सशक्त प्रतीक बनकर उभरा, जिसने देशभर के नागरिकों के हृदय को एकता और गौरव से भर दिया। इसी क्रम में शुभांशु शुक्ला ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र पर पहुँचने वाले प्रथम भारतीय बनकर एक नया इतिहास रचा। उनकी यह उपलब्धि अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारतीय महत्वाकाँक्षा की एक बड़ी छलांग है। 2025 में 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव, देशभर में देशभक्ति की भावना को नई ऊर्जा देने वाला रहा जिसने उस गीत की स्मृति को फिर से जीवंत किया जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण की यात्रा में पीढ़ियों को प्रेरित किया है।

AXIOM
Certificate of Authenticity

वन्दे मातरम्
राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष का स्मरणोत्सव
मुख्य अतिथि

आस्था, अध्यात्म, और स्वदेशी की भावना

2025 के आरम्भ में आयोजित 'प्रयागराज महाकुम्भ' में व्यापक जनभागीदारी और मज़बूत प्रशासनिक समन्वय देखने को मिला। 'स्वदेशी' पर बढ़ते ज़ोर का प्रभाव देश में निर्मित वस्तुओं के प्रति लोगों की बढ़ती प्राथमिकता में स्पष्ट होता है। वर्ष के अंत में अयोध्या स्थित राम मंदिर में आयोजित 'ध्वजारोहण' समारोह ने एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक पल चिह्नित किया है।

वन्यजीव संरक्षण एवं जैव विविधता

'प्रोजेक्ट चीता' के तहत 2025 के दौरान भारत में चीतों की संख्या बढ़कर 30 हो गई। यह परियोजना प्रजाति की बहाली, आवास प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण की दिशा में सरकार के निरंतर किए जा रहे प्रयासों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

खेल के मैदान में उपलब्धियाँ

भारत की पुरुष क्रिकेट टीम ने जहाँ आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी जीती, वहीं महिला क्रिकेट टीम ने अपना पहला आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप ख़िताब जीतकर इतिहास रच दिया। यही नहीं, भारत ने महिला ब्लाइंड टी-20 विश्व कप भी अपने नाम किया जो दर्शाता है कि खेलों में भी समावेशी प्रगति हुई है। एशिया कप टी-20 ख़िताब भी अपने नाम कर भारत ने वर्ष की उपलब्धियों में और इज़ाफ़ा किया, और विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने 22 पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया।

युवा नेतृत्व संवाद 2 .0

विचारों और नवाचार के माध्यम से विकसित भारत का निर्माण

विकसित भारत का सपना एक सामूहिक राष्ट्रीय मिशन है। इसकी सबसे शक्तिशाली प्रेरक शक्ति देश के युवा हैं, जो नए दृष्टिकोणों और योगदान देने की अदम्य इच्छा से परिपूर्ण हैं। इस अपार क्षमता को पहचानते हुए, भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय ने एक अनूठा मंच – 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' (VBYLD) शुरू किया है। जैसाकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 129वें सम्बोधन में कहा, यह पहल युवाओं के एक आम सवाल का सीधा जवाब है: "वे अपने विचार कैसे साझा कर सकते हैं?" VBYLD 2.0 महज एक आयोजन से कहीं बढ़कर है, यह राष्ट्रीय प्रगति के लिए युवा नवाचार का उपयोग करने की एक व्यवस्थित और समावेशी प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है।

राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद (VBYLD) का दूसरा संस्करण 12 जनवरी, 2026 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। चार दिवसीय इस कार्यक्रम ने, युवा नेताओं को महिला नेतृत्व में विकास, सतत कृषि और भारत के स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र सहित दस महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यावहारिक विचार प्रस्तुत करने के लिए, एक गतिशील मंच प्रदान किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए युवाओं से सीधे संवाद किया और भारत के विकास का नेतृत्व करने की उनकी क्षमताओं पर अटूट विश्वास

व्यक्त किया। उन्होंने इस पहल में व्यापक भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए कहा, "करोड़ों युवाओं का इस पहल से जुड़ना... युवा शक्ति की इतनी व्यापक भागीदारी अभूतपूर्व है।" प्रधानमंत्री ने युवाओं को वैश्विक ज्ञान को भारत की विरासत के साथ जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया और वैदिक वाक्य 'आनो भद्रः कृतवो यन्तु विश्वतः' (सभी दिशाओं से शुभ विचार आएं) उद्धृत करते हुए सलाह दी, "आपको दुनिया भर की सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखना चाहिए, लेकिन अपनी विरासत और विचारों को कम आंकने की प्रवृत्ति को कभी हावी न होने दें।"

जन आंदोलन के रूप में संवाद की मूलभूत रूपरेखा के कारण ही इतनी

VBYLD
VIKSIT BHARAT
YOUNG LEADERS
DIALOGUE 2026

अभूतपूर्व भागीदारी संभव हो पाई। VBYLD की सफलता का कारण है इसे एक सीमित सेमिनार के बजाय एक जन-आंदोलन के रूप में तैयार किया जाना। इसकी शुरुआत ज़मीनी-स्तर से व्यापक प्रतियोगिताओं के माध्यम से होती है। MYBharat पोर्टल पर आयोजित प्रारम्भिक 'विकसित भारत क्विज़' में 5 लाख से अधिक युवा भारतीयों ने भाग लिया। 12 भाषाओं में आयोजित इस क्विज़

में देश के विभिन्न पहलुओं और विकसित भारत के प्रति दृष्टिकोण का परीक्षण किया गया। यह क्विज़ पहली सितम्बर, 2025 से 31 अक्तूबर, 2025 के बीच MYBharat और MyGov प्लेटफॉर्म पर संयुक्त रूप से आयोजित की गई, जिसमें सभी 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों ने भाग लिया। तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सबसे अधिक भागीदारी दर्ज की गई। इस व्यापक पहुँच ने सुनिश्चित किया कि संवाद केवल महानगरों के कुछ चुनिंदा लोगों तक ही सीमित न रहे, बल्कि पूरे देश की प्रतिभाएँ इसका लाभ उठाएं।

पहले संस्करण (2025) ने एक मज़बूत नींव रखी, जिससे भारत मंडपम में 2,000 से अधिक युवा नेताओं को देश के नेतृत्व के साथ स्वतंत्र संवाद स्थापित करने का ऐतिहासिक अवसर मिला। यह संस्करण 'डिज़ाइन फॉर भारत' और 'टेक फॉर विकसित भारत' जैसे नए नवाचार क्षेत्रों के साथ अपने दायरे को बढ़ाता है, जो सामाजिक चुनौतियों के लिए व्यावहारिक समाधानों पर केंद्रित है। पहली बार इसमें अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागी भी शामिल हुए, जिससे यह संवाद विचारों के वैश्विक आदान-प्रदान में परिवर्तित हो गया।

VBYLD की असली खूबी इसकी संरचना में निहित है- यह 15 से 29 वर्ष की आयु के युवाओं के लिए कृषि, कौशल विकास, शासन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आदि जैसे विशिष्ट क्षेत्रों पर नवीन विचारों को व्यक्त करने का एक मंच है। इसकी शुरुआत डिजिटल और क्षेत्रीय-स्तर पर आयोजित गतिविधियों-प्रश्नोत्तरी, निबंध

और राज्य-स्तरीय प्रस्तुतियों से होती है, जो प्रतिभाओं की पहचान करने और विचारों को आकार देने में सहायक होती हैं। इसका समापन राष्ट्रीय संवाद में होता है, जहाँ चयनित युवा नेता अपने परिष्कृत विचारों को सीधे प्रधानमंत्री और अन्य नीति निर्माताओं के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि अंतिम संवाद सार्थक हो, जिसमें गहन जाँच-पड़ताल और विकास के बाद, विचार मात्र प्रतीकात्मक न रहकर, वास्तविक नीतिगत सुझाव प्रदान करें।

VBYLD 2.0 का महत्त्व अत्यंत गहरा है। पहला, यह नवाचार को लोकतांत्रिक बनाता है क्योंकि यह किसी भी युवा भारतीय को, जिसके पास कोई विचार हो, एक स्पष्ट और सुलभ मार्ग प्रदान करता है। दूसरा, यह युवाओं में स्वामित्व की भावना पैदा करता है जिससे वे विकसित भारत मिशन में निष्क्रिय लाभार्थी होने के बजाय सक्रिय हितधारक बनते हैं। तीसरा, यह युवा ऊर्जा को राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ जोड़ता है जिससे रचनात्मकता को कृषि, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और स्थिरता के क्षेत्र में वास्तविक चुनौतियों के समाधान की दिशा में निर्देशित किया जा सके।

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद (VBYLD) आज युवा परिवर्तनकर्ताओं के एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन में तब्दील हो चुका है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन भागीदारी और युवा शक्ति के दृष्टिकोण पर आधारित यह संवाद भारत के युवाओं के लिए शासन में सक्रिय भागीदारी, नवीन विचारों के आदान-प्रदान और देश के विकास एजेंडा में सार्थक योगदान देने का एक गतिशील मंच है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के युवा सशक्तीकरण के दृष्टिकोण से प्रेरित VBYLD शासन, नवाचार और राष्ट्र निर्माण के लिए नए विचार प्रस्तुत करने वाले नेताओं की एक नई पीढ़ी को आकार दे रहा है। भारत के विकसित भारत 2047 की ओर अग्रसर होने के साथ ही यह पहल युवा आवाज़ों के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में उभरी है।

डॉ. अभय जेरे
उपाध्यक्ष
AICTE एवं मुख्य नवाचार अधिकारी
शिक्षा मंत्रालय

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2025

एक ऐसा मंच जहाँ अग्रणी है युवा भारत

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (SIH) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के **'विकसित भारत@2047'** की परिकल्पना के एक महत्त्वपूर्ण आधार के रूप में सामने आया है। यह एक ऐसा परिवर्तनकारी मंच है, जहाँ भारत के युवाओं की रचनात्मक प्रतिभा का उपयोग देश की वास्तविक चुनौतियों के समाधान के लिए किया जाता है। एक साधारण प्रतियोगिता से आगे बढ़कर राष्ट्रव्यापी आंदोलन के रूप में विकसित होते हुए SIH, छात्रों को नौकरी तलाश करने के बजाय नवाचार के क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति देता है जिससे विभिन्न सरकारी विभागों की जटिल समस्याएँ व्यावहारिक समाधानों में बदल जाती हैं। इस पहल पर प्रधानमंत्री के विशेष ज़ोर देने से देश एक उत्पाद-आधारित राष्ट्र की ओर अग्रसर होता है, जहाँ 13 लाख से अधिक छात्रों की व्यापक भागीदारी नवाचार को सर्वसुलभ बनाते हुए सुनिश्चित करती है कि 'समाधानों का अमृत' देश के हर कोने से प्रवाहित हो। इस सहयोगात्मक तंत्र के माध्यम से, माननीय प्रधानमंत्री की परिकल्पना और SIH मिलकर ऐसे भविष्य का निर्माण कर रहे हैं, जहाँ सामाजिक जागरूकता, तकनीकी परिपक्वता और उद्यमशीलता की अटूट भावना के साथ युवा भारत वैश्विक मंच पर नेतृत्व प्रदान करता है।

युवाओं की अगुआई में नवाचारः राष्ट्र निर्माण की धड़कन

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन केवल 36 घंटे का कोडिंग मैराथन मात्र नहीं है अपितु यह माननीय प्रधानमंत्री के उस विश्वास की सशक्त अभिव्यक्ति है कि 'आज के युवा केवल भविष्य ही नहीं, हमारे वर्तमान के भी निर्माता हैं।' *SIH* सरकारी विभागों और उद्योगों की वास्तविक चुनौतियाँ छात्रों के समक्ष रखकर उन्हें किताबी शिक्षा से आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। यह उन्हें तकनीक का केवल 'उपभोक्ता' बनने के बजाय 'उत्पादक' बनने का सशक्त अवसर देता है।

रेलवे सुरक्षा के लिए एआई-संचालित प्रणालियाँ विकसित करनी हो या कृषि दक्षता के लिए कम लागत वाला हार्डवेयर बनाना हो, SIH ऐसा आधार प्रदान करता है जो युवाओं के नेतृत्व में होने वाले नवाचार से राष्ट्र निर्माण को सीधे प्रभावित करता है

प्रतियोगिता से राष्ट्रीय आंदोलन तक

2017 में आरम्भ होने के बाद से, स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (SIH) ने अभूतपूर्व और तीव्र वृद्धि देखी है। एक छोटे से प्रयास से आरम्भ हुई पहल, आज समाधान-संग्रह (क्राउडसोर्सिंग) के एक सुदृढ़ मॉडल के रूप में संस्थागत रूप ले चुकी है। पिछले आठ वर्ष में इसने पूरे देश में एक सशक्त 'हैकाथॉन संस्कृति' को बढ़ावा दिया है। आज यह आंदोलन इतनी ऊँचाई पर पहुँच चुका है कि SIH-2025 में 68,000 से अधिक टीमों से 72,165 विचारों की प्रस्तुतियाँ प्राप्त होने का रिकॉर्ड बना। प्रारम्भिक संस्करणों की तुलना में यह भागीदारी आठ गुना अधिक है जो इस बात का प्रमाण है कि नवाचार अब केवल चुनिंदा प्रयोगशालाओं और बड़े महानगरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारत के हर कोने में छात्रों की आकाँक्षा बन चुका है। इस कार्यक्रम ने, युवाओं की अपार क्षमता को समस्या-समाधान के एक सुव्यवस्थित इंजन में बदलकर, रचनात्मकता को महानगरीय केंद्रों से निकालकर ज़मीनी-स्तर तक सफलतापूर्वक विकेंद्रीकृत किया है। यह उल्लेखनीय यात्रा माननीय प्रधानमंत्री की उस परिकल्पना को और सुदृढ़ करती है कि देश के युवाओं को सही मंच दिया जाए तो वे कल्पना और शासन के बीच की दूरी को प्रभावी ढंग से पाट सकते हैं।

समावेशिताः नवाचार तंत्र का लोकतंत्रीकरण

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2025 की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है समावेशिता का इसका क्रांतिकारी स्वरूप।

वर्षों के दौरान 13 लाख से अधिक छात्रों और 6,000 से अधिक संस्थानों की भागीदारी के साथ, इस मंच ने शहरी केंद्रों और ग्रामीण प्रतिभाओं के बीच की दूरी को सफलतापूर्वक पाट दिया। इस वर्ष क्षेत्रीय समावेशन, बहुभाषी प्रस्तुतियों और टियर-2 व टियर-3 शहरों में 60 नोडल केंद्रों की स्थापना पर विशेष बल दिया गया, जिसने यह सुनिश्चित किया कि नाभा (Nabha) या इरोड (Evode) के किसी छात्र को भी राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में उतना ही अवसर मिले जितना नई दिल्ली या बेंगलुरु के किसी छात्र को मिलता है। यही नहीं, महिलाओं की बढ़ती भागीदारी भी एक अन्य पक्ष है। SIH 2025 के अंतिम चरण में 2,900 से अधिक महिलाओं की भागीदारी रेखांकित करती है कि भारत की नवाचार यात्रा सही मायने में सामूहिक है।

(SIH 2025 में टीमवार भागीदारी देखें)

सहयोगः शासन और अकादमिक जगत के बीच सेतु

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन की वास्तविक शक्ति इसकी सहयोगात्मक संरचना में निहित है। इस वर्ष 80 से अधिक सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) और उद्योगों ने समस्याओं के

271 महत्त्वपूर्ण वक्तव्य पेश किए। यह सहयोग सुनिश्चित करता है कि हमारे युवाओं की ऊर्जा का उपयोग साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, मेड-टेक और स्वच्छ ऊर्जा जैसे उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से किया जाए। जब कोई छात्र टीम, रक्षा मंत्रालय के लिए 'साइबर घटना एवं सुरक्षा वेब पोर्टल' या पंजाब सरकार के लिए 'स्मार्ट फसल परामर्श प्रणाली' पर काम करती है, तो वे केवल कोई पुरस्कार नहीं जीत रहे होते अपितु वे राज्य के साथ साझेदारी कर रहे होते हैं जिसका उद्देश्य 1.4 अरब नागरिकों का जीवन बेहतर बनाना है।

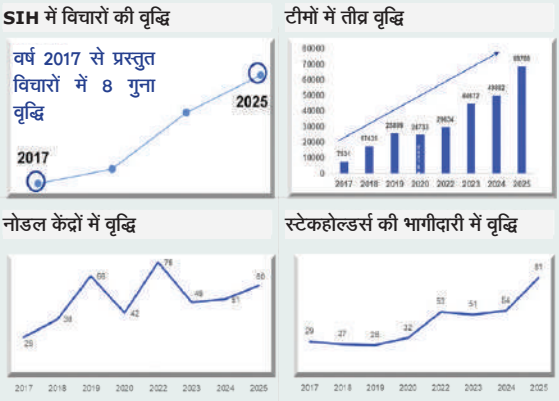

सामाजिक सजगता और युवाओं की परिपक्वता

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2025 में प्रतिभागियों ने जो विषय चुने, वो उनकी गहरी सामाजिक जागरूकता दर्शाते हैं। वित्तीय धोखाधड़ी की रोकथाम, डिजिटल गिरफ्तारी और ग्रामीण साइबर सुरक्षा के लिए विकसित समाधान स्पष्ट करते हैं कि हमारे युवा, समाज के समक्ष आधुनिक समय की 'चुनौतियों' के प्रति अत्यंत सजग हैं। मानसिक स्वास्थ्य और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन पर एकाग्रता दर्शाती है कि यह पीढ़ी संवेदनशील और ज़िम्मेदार है। वे एआई और ब्लॉकचेन का उपयोग केवल लाभ के लिए नहीं, बल्कि सुरक्षा और प्रगति के उद्देश्य से कर रहे हैं।

वैश्विक नवाचार केंद्र का लॉन्चपैड

2024 के ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत के 39वें स्थान पर पहुँचने में स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन जैसे मंचों का निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। SIH अब उद्यमिता के लिए एक सशक्त लॉन्चपैड बन चुका है। इसके पिछले संस्करणों से बड़ी संख्या में छात्र एवं संकाय-नेतृत्व वाले स्टार्टअप उभरे हैं, जिन्हें AICTE के 'युक्ति' (YUKTI) पोर्टल और 'निधि' प्रयास (NIDHI Prayas) योजना जैसी पहलों का समर्थन मिला है।

छात्रों को कुछ एकदम अलग ('आउट-ऑफ-द-बॉक्स') सोचने के लिए प्रेरित करते हुए, स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 'मेड इन इंडिया' समाधानों की एक ऐसी निरंतर शृंखला तैयार कर रहा है, जिसका उपयोग वैश्विक-स्तर पर हो सकता है। 2047 की ओर अग्रसर होते हुए, स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन इस बात का सशक्त प्रमाण है कि जब सरकार मंच दे और युवा अपना जुनून, तो ऐसी कोई चुनौती नहीं, जिसका भारत समाधान न कर सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'मन की बात' का 129वाँ अंक एक आह्वान है- "हर युवा नवप्रवर्तक से मैं कहना चाहता हूँ कि मंच तैयार है, समस्याएँ चिह्नित हैं और पूरा राष्ट्र देख रहा है। आपके विचार ही 'विकसित भारत' की रूपरेखा हैं।"

प्रो. गोविंदन रंगराजन
निदेशक
भारतीय विज्ञान संस्थान
(IISc)

गीतांजलि IISc

प्यार बिखेरता संगीत ग्रुप

बेंगलुरू के भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) में दस वर्ष पहले गठित हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत ग्रुप गीतांजलि IISc का आदर्श वाक्य यानी मोटो है 'संगीत सबसे ऊपर'। यह मोटो आज भी इस ग्रुप की नींव की भांति ही है जो IISc में संगीत और संस्कृति की परम्परा को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। गीता अनंत ने शास्त्रीय संगीत के प्रति अपने प्रेम को साझा करने की दिशा में महज चार विद्यार्थियों को लेकर जो साधारण-सी शुरूआत की थी वही आज 4 से 85 वर्ष तक के सभी संगीत प्रेमियों के बड़े समुदाय का रूप ले चुकी है।

गीतांजलि IISc ग्रुप की संस्थापक गीता अनंत ने IISc की त्रैमासिक पत्रिका कनेक्ट को एक बार दिए इंटरव्यू में कहा था, "संगीत हमारे ग्रुप में सभी के लिए सर्वोपरि है। हम संगीत के प्रति रुचि और लगन के अलावा किसी अन्य बात पर ध्यान नहीं देते। इसके अतिरिक्त कोई और चीज़ हमारे लिए खास महत्त्व नहीं रखती- न तो आयु, न स्त्री-पुरुष का भेदभाव, न किसी का धर्म और न ही यह बात कि आप पहले से संगीत के बारे में क्या और कितना जानते हैं।"

गीतांजलि IISc के सदस्यों में विद्यार्थी, शिक्षक, उनके पति-पत्नी और बच्चे शामिल हैं जो अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हैं। अपने पिता की रेलवे की नौकरी के कारण देश के विभिन्न भागों में रहने के बाद करीब 30 वर्ष पहले गीता IISc बेंगलुरू आई थीं जब उनके पति अनंत रामस्वामी वहाँ शिक्षक नियुक्त होकर आए थे, वे अब वहीं सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष हैं। लगातार बदलावों के दौर में गीता को ज़रा भी आभास नहीं था कि इस कैम्पस में उनका जमाव इतना गहरा हो जाएगा। प्रेरणा का एक ही स्त्रोत था, और वह था- संगीत के प्रति जुनून की हद तक उनका लगाव।

गीता ने 2001 में अपने घर में ही थोड़े से विद्यार्थियों को लेकर हिंदुस्तानी संगीत की कक्षाएँ शुरू की थीं। उनका कहना है, "अपने गुरू के आशीर्वाद और परिवारजनों के सहयोग से अपने कुछेक विद्यार्थियों के साथ ही हमने गीतांजलि IISc ग्रुप शुरू किया था। बस, यहीं से हमारी यात्रा शुरू हुई थी।"

शुरू में तो शिक्षक और विद्यार्थी ही ग्रुप में आए पर जल्दी ही संस्थान के कई अन्य संगीत प्रेमी भी साथ जुड़ते चले गए। कुछ तो संगीत के प्रति प्रेम और रुचि के कारण आए और कुछ जिज्ञासा के कारण ग्रुप में शामिल हो गए। कुछ लोग तो नई विधा सीखने की चुनौती मानकर ग्रुप में आए थे जबकि अन्य कई लोग इसलिए शामिल हुए कि यहाँ उन्हें वही अवसर मिल सकता था जिसकी उन्हें तलाश थी। फिर कुछ लोग मेलजोल बढ़ाने के उद्देश्य से भी हमारे ग्रुप से जुड़े थे। IISc कैम्पस जैसे उच्च शिक्षण माहौल में गीतांजलि IISc ने लोगों को काम के तनाव से राहत दिलाने में अहम भूमिका निभायी।

2015 तक ग्रुप का व्यापक विस्तार हो गया और यह बाकायदा एक ऐसा क्लब बन गया जो विद्यार्थियों को स्टेज पर संगीत प्रस्तुति का अवसर प्रदान करता था। वैसे तो मुख्य रूप से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर ही ज़ोर दिया जाता था पर यह ग्रुप लोकसंगीत, अर्ध-शास्त्रीय गायन, क्षेत्रीय संगीत और पाश्चात्य संगीत का भी शिक्षण देता है।

अब तो यह ग्रुप SPICMACAY (सोसायटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक एंड कल्चर अमंगस्ट यूथ) के साथ मिलकर IISc में हर महीने कार्यक्रम आयोजित करता है जिनमें

संगीत और नृत्य प्रस्तुतियों के साथ ही कठपुतली-शो, लोकनृत्य, जैज़ संगीत और थियेटर भी शामिल रहते हैं।

गीता अनंत बताती हैं कि असल मकसद कार्यक्रम आयोजित करने के साथ ही कलाकारों से मिलना और उनसे बातचीत करके नई बातें सीखना था। यह ग्रुप वर्ष में कम से कम दो बार विधिवत समग्र कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। इसकी सफलता का संकेत इस बात से मिलता है कि ग्रुप को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के निमंत्रण मिलते हैं; हमारे एक सदस्य कलाकार की गज़ल अल्बम की समीक्षकों ने ज़बर्दस्त सराहना की है।

सदस्यों की संख्या बढ़ने के बावजूद गीतांजलि IISc ने अपने समुदाय के बीच करीबी परिवार जैसा माहौल बना रखा है। गीता सप्ताह में हर रोज़ एक-एक सदस्य के साथ अलग क्लास लेती हैं। उन्हें गुरू शिष्य परम्परा में पक्का भरोसा है और वे चाहती हैं कि उनके शिष्य भी इस परम्परा को आगे बढ़ाएँ। उनका मानना है कि इस परम्परा से ग्रुप में आपसी निकटता बनी हुई है और सदस्य एक-दूसरे की पूरी मदद करते हैं। IISc से ग्रेजुएशन करने के बाद कहीं अन्य स्थान पर चले जाने वाले अनेक विद्यार्थी गीतांजलि IISc की ऑनलाइन क्लासों के ज़रिए अभी तक ग्रुप से जुड़े हुए हैं।

अत्यधिक तनाव वाले अनुसंधान कार्य में लगे रहने वाले विद्यार्थियों के लिए यह ग्रुप सुरक्षित स्थल की भूमिका निभाता है। वे अपने संघर्ष पर बातचीत कर पाते हैं। गीता जीवन या प्रयोगशाला की चुनौतियों से निपटने की तुलना रागों में महारत हासिल करने से करती हैं क्योंकि यह आसानी से नहीं हो पाता और इसके लिए बहुत संयम और अनुशासन की

ज़रूरत होती है तथा यही गुण वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भी बहुत ज़रूरी होते हैं।

इन कक्षाओं में मंच पर प्रस्तुति देने की कला सिखाने पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है, तथा यह भी समझाया जाता है कि कैसे अपना आत्मविश्वास दिखाएँ, श्रोताओं या दर्शकों से आँखें कैसे मिलाएँ और उनसे इंटरेक्ट कैसे करें। ये सभी पहलू व्यक्तित्व और प्रोफेशनल उन्नति के लिए अहम हैं।

गीता का मानना है कि 'गीतांजलि IISc एक विशाल परिवार है।' हम अपने ग्रुप में न तो स्पर्धा करते हैं और न ही तुलना करते हैं। हमारी प्रस्तुति देखने पर कभी-कभी आपको लगेगा कि पिता-पुत्री या पिता-पुत्र परफार्मेंस दे रहे हैं या लगेगा कि माताएँ कार्यक्रम कर रही हैं। आप देखेंगे कि समूचा परिवार रुचि लेता है और पूरी तरह कार्यक्रम से जुड़ जाता है। यह कहना कतई गलत नहीं होगा कि गीतांजलि IISc ने समृद्ध हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रसार IISc के लोगों में करके इस संस्थान को सांस्कृतिक रूप से जीवंत बना दिया है।

गीता के अनुसार, "इस पूरी सफलता का मुख्य आधार संगीत के प्रति गहरा लगाव है। संगीत कोई अतिरिक्त बोझ नहीं लगना चाहिए। यह तो कलाकारों की अभिव्यक्ति या जीवनशैली के सहज अंग जैसा होना चाहिए।" हर रोज़ नई और कठिन चुनौतियों से जूझने वाले विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए ऐसी जगह पाना मुश्किल होता है। हाँ, IISc में यह मौजूद है और इसका नाम है गीतांजलि IISc.

शशिधर नागराजप्पा
अध्यक्ष
कन्नड मितारु
संयुक्त अरब अमीरात

कन्नड पाठशाले

सीमाओं से परे भाषा, जड़ें और पहचान

दुबई की कन्नड पाठशाले के प्रयासों पर प्रकाश डालने के लिए माननीय प्रधानमंत्री के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं क्योंकि इसके माध्यम से विश्वभर के कन्नड प्रवासियों के समर्पण भाव का परिचय मिलता है। श्री मोदी के शब्द किसी एक संस्थान की मान्यता को ही व्यक्त नहीं करते बल्कि भौगोलिक दूरियों के बावजूद सांस्कृतिक, भाषायी और भावनात्मक सम्बंधों को मजबूत बनाने में भारतीयों के सतत प्रयासों को भी उजागर करते हैं।

भारत से बाहर और खासकर दुबई जैसे विश्व-स्तरीय महानगर में रहने वाले कन्नड लोगों के लिए यह मान्यता जबर्दस्त प्रोत्साहन देने वाली है। इससे हमें पक्की तसल्ली हो जाती है कि अपनी मातृभाषा को संरक्षण देकर उसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने की दिशा में किए जा रहे हमारे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा रहा है तथा उनका महत्त्व समझते हुए उनका भरपूर सम्मान भी किया जा रहा है।

दुबई की कन्नड पाठशाले का जन्म

कन्नड पाठशाले दुबई (KPSD) का जन्म, साधारण-सी लगने वाली पर गम्भीर चिंता से जुड़ी, इस सोच के आधार पर हुआ कि हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि हमारे बच्चे विदेशी भूमि में पलने और बड़े होने पर भी अपनी जड़ों से किस प्रकार जुडे रह सकते हैं? कर्नाटक से जाने वाले परिवार काम-धंधे की वजह से या निजी अवसरों के कारण जैसे-जैसे संयुक्त अरब अमीरात में बसते गए, वैसे-वैसे ही उनके अभिभावकों ने देखा कि उनके बच्चे धीरे-धीरे कन्नड भाषा से दूर होते जा रहे हैं।

शुरू में तो स्थान प्राप्त करने की चुनौती सामने आई जिसे जेएसएस प्राइवेट स्कूल के उदार सहयोग से सुत्तूर मठ के परम पूज्य शिवरात्रि देशिकेंद्र स्वामीजी की देखरेख में हल किया गया तथा डॉ. प्रभाकर कोरे के प्रबंधन वाले बिल्वा इंडिया स्कूल और ए.एस.ए.पी. (ASAP) ट्यूटर्स के सौजन्य से जगह भी मिल गई।

शुरुआत सप्ताहांत में अनौपचारिक बैठकों से की गई जिनमें समर्थित वॉलंटियर कन्नड भाषा के

शब्दों और रोज़ाना इस्तेमाल होने वाली शब्दावली सिखाती थीं और बढ़ते-बढ़ते यह बाकायदा शिक्षा संस्थान के रूप में विकसित हो गया। 2014 में औपचारिक प्रबंधन समिति गठित की गई जिसका नेतृत्व मुझे अर्थात शशिधर नागराजप्पा को सौंपा गया और उसमें सिद्धलिंगेश बी.आर., सुनील गावस्कर, शशिधर मुंडरागी तथा नागराज राव को भी लिया गया था। पचास से ज़्यादा वॉलंटियर और शिक्षिकाओं के आ जाने से इस प्रयास को बल मिला; इनका नेतृत्व रूपा एच.जी. ने संभाला जो संस्थान के निर्माण के लिए अथक प्रयास कर रही थीं।

मातृभाषा में साक्षर होना बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार

केपीएसडी की पक्की मान्यता है कि मातृभाषा में साक्षर होना यानी पढ़ना-लिखना, सीखना बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसकी व्यवस्था करना माता-पिता और समुदायों की ज़िम्मेदारी है ताकि अप्रवासी भारतीय अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन परम्पराओं से जुड़े रहें। मूल्यों-मान्यताओं, भावनाओं और पहचान की अभिव्यक्ति का सबसे

प्रामाणिक माध्यम भाषा ही है। कन्नड पाठशाले दुबई मुनाफे के लिए नहीं बल्कि पूरी तरह भावनाओं के आधार पर चलाई गई थी और इसकी स्थापना का उद्देश्य लोगों को कन्नड भाषा में साक्षर बनाने की सुविधा का प्रसार करना, भाषा के प्रति गौरव का भाव जगाना, सांस्कृतिक जड़ों से फिर जोड़ना तथा संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले कन्नड भाषी अप्रवासी युवाओं में अपनत्व का भाव पैदा करना था।

सामुदायिक प्रयासों से विस्तार

इन वर्षों में केपीएसडी अभिभावकों, वॉलंटियरों, शिक्षिकाओं और सामुदायिक नेताओं के सतत सहयोग से बढ़ता रहा है। प्रवीण शेट्टी और मोहन नरसिम्हामूर्ति जैसे माननीय संरक्षकों, मोहम्मद मूलुरु तथा डॉ. फ्रेंक फर्नांडेज़ जैसे परामर्शदाताओं और सामुदायिक संगठनों के सहयोग की भी इस यात्रा में उल्लेखनीय भूमिका रही है। कर्नाटक सरकार के कन्नड विकास बोर्ड की सहायता से कक्षाओं को सुचारू बनाया गया तथा पाठ्यक्रम को और विकसित किया गया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल किए गए। विद्यार्थी भाषा सीखने के साथ-साथ कन्नड साहित्य, गीत, कहानी सुनाने और त्योहारों में भी रुचि लेने लगे थे।

केपीएसडी सही अर्थों में अपनी सशक्त सामुदायिक भावना के सहारे ही इतनी विशेष सफलता प्राप्त कर पाया। शिक्षकगण काम के ज़्यादा घंटों के बाद भी स्वेच्छा से अतिरिक्त समय लगाते हैं, अभिभावकगण पूरी लगन के साथ हर आयोजन में भाग लेते हैं और बच्चे भी अनेकानेक वैश्विक भाषाओं के बीच घिरे होने के बावजूद पूरे गर्व के साथ कन्नड पढ़ते, लिखते और बोलते हैं। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा इस पहल का उल्लेख किया जाना इस सामूहिक प्रयास तथा सांस्कृतिक संकल्प का पक्का प्रमाण है।

निस्वार्थ सेवा और निःशुल्क शिक्षण

केपीएसडी पूरी तरह गैर-कारोबारी

आधार पर चल रहा है। हमारा मानना है कि युवा पीढ़ी को भाषायी ज्ञान देना हमारा नैतिक कर्तव्य है। तभी न तो कोई फीस ली जाती है और न ही शिक्षिकाएँ कोई वेतन लेती हैं। शिक्षकों की यह टीम पूरे निस्वार्थ भाव के साथ 12 वर्ष से भी ज़्यादा समय से कन्नड भाषा की सेवा में पूरे समर्पण और गर्व के साथ लगी है। इस वर्ष की शिक्षिकाओं में काव्या, बिंदू, दिव्या, चेतना, विनुथा, मनसा हेगडे, मीना, रूपा वोराटे, मंजुला, त्रिवेणी, रक्षिता, स्वाति, नयना, अनुपमा, अर्चना, कल्पा, मंडेला, मनसा विनया तथा पहले के वर्षों में योगदान कर चुकी कई अन्य शिक्षिकाएँ हैं।

विदेश में कन्नड पढ़ाने की चुनौतियाँ

विदेशी धरती पर कन्नड पढ़ाना अपने-आप में अनूठी चुनौती है। बच्चे शुरू से अंग्रेज़ी, अरबी और अन्य वैश्विक भाषाओं का माहौल देखते हैं और कन्नड

ज़्यादातर 'घरेलू भाषा' बनकर रह जाती है। समय का अभाव, सीमित रूप से सप्ताहांत में कक्षाएँ लगाना, विदेशी अध्ययन की सुविधाओं के अभाव तथा बहु-सांस्कृतिक परिवेश में लम्बे समय तक रुचि बनाए रखने जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए नवाचार खोजना ज़रूरी हो जाता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षिकाएँ कहानी, नाटक, संगीत और सांस्कृतिक विधाओं की मदद लेती हैं।

सार्थकता की नई भावना

माननीय प्रधानमंत्री के उल्लेख से केपीएसडी में नई ऊर्जा और उद्देश्य भाव का संचार हुआ है। इससे शिक्षिकाओं का संकल्प और दृढ़ हुआ है, अभिभावक प्रेरित हुए हैं तथा विद्यार्थी भी अपनी भाषा और विरासत के प्रति गौरव का अनुभव करने लगे हैं।

इससे यही ज़ोरदार संदेश मिलता है- **'जहाँ भारतीय रहते हैं वहाँ भारतीय भाषाएँ भी रहती हैं।'**

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

बदलती ज़िंदगियाँ

मणिपुर की हरी-भरी वादियाँ जितनी खूबसूरत हैं, वहाँ के दूरदराज़ इलाक़ों में ज़िंदगी उतनी ही चुनौतियों से भरी है। पहाड़ों के बीच बसे कई गाँवों में, जहाँ सूरज सबसे पहले निकलता है, विडम्बना यह थी कि वहाँ शाम होते ही अंधेरा छा जाता था। बिजली की कमी न सिर्फ़ घरों को अंधेरे में रखती थी बल्कि स्वास्थ्य और रोज़ी-रोटी पर भी गहरा असर डालती थी। लेकिन कहते हैं न कि अँधेरे को कोसने से बेहतर है एक दीया जलाना। मणिपुर के युवा मोइरांगथेम सेठ ने बिल्कुल यही किया।

मोइरांगथेम सेठ ने ग्रिड की बिजली का इंतज़ार करने के बजाय सूरज की रोशनी को ही अपनी ताक़त बना लिया। आज उनकी और सरकार की कोशिशों से मणिपुर के सुदूर इलाक़ों में एक नई क्रांति आ रही है।

एक स्थानीय समाधान की खोज

मोइरांगथेम सेठ उस पीढ़ी से आते हैं जिसने बचपन में बिजली की भारी क़िल्लत देखी है। उनके लिए सौर ऊर्जा सिर्फ़ एक तकनीक नहीं बल्कि ज़रूरत थी। उन्हें इस

काम की प्रेरणा कहाँ से मिली, इस बारे में वे बताते हैं:

"मैंने बचपन में देखा है कि कैसे गाँव वाले बिजली के बिना संघर्ष करते थे। परिवार, स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र अक्सर अंधेरे में काम करने को मजबूर थे। मुझे महसूस हुआ कि ग्रिड के विस्तार का इंतज़ार करना काफी नहीं है- हमें एक स्थानीय और टिकाऊ समाधान (Sustainable Solution) की ज़रूरत थी। सौर ऊर्जा सबसे व्यावहारिक और सशक्त विकल्प लगा क्योंकि इसे वहीं पैदा किया जा सकता था जहाँ लोग रहते हैं।"

चुनौतियों से लड़कर मिली कामयाबी

मणिपुर के पहाड़ी रास्तों पर काम करना आसान नहीं था। मोइरांगथेम ने जब सोलर पैनल लगाने की शुरुआत की तो आरम्भ में उन्हें लोगों की शंका और तकनीकी दिक्क़तों का सामना करना पड़ा। अपनी यात्रा के शुरुआती दिनों के बारे में वे कहते हैं:

"शुरुआती चुनौतियाँ बहुत बड़ी थीं- जागरूकता की कमी और पैसों की तंगी। कई गाँव वाले शुरू में शक करते थे, उन्हें मनाने के लिए धैर्य और भरोसा कायम करना पड़ा। तकनीकी तौर पर पहाड़ी इलाक़ों में उपकरण ले जाना और सही इंस्टॉलेशन करना भी मुश्किल था। लेकिन हर सफल इंस्टॉलेशन ने हमें आगे

बढ़ने का हौसला दिया।"

बदलती स्वास्थ्य सेवाएँ और आजीविका

आज मोइरांगथेम के अभियान की बदौलत सैकड़ों घरों में रोशनी पहुँच चुकी है। लेकिन सबसे ख़ास बात यह है कि सौर ऊर्जा ने वहाँ की स्वास्थ्य सेवाओं और लोगों की कमाई के ज़रियों पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव डाला है। मणिपुर की 'नारी शक्ति', मछुआरों और स्थानीय कलाकारों को इससे बहुत मदद मिली है। इसके प्रभाव के बारे में मोइरांगथेम बताते हैं:

"ग्रामीण क्लीनिक अब टीकों (Vaccines) को सुरक्षित रख सकते हैं और रात में भी रोशनी में प्रसव (Delivery) करा सकते हैं। कारीगर और किसान सौर ऊर्जा से चलने वाले

उपकरणों का इस्तेमाल कर अपने काम के घंटे और उत्पादकता बढ़ा रहे हैं। बच्चों के लिए सोलर लैम्प की रोशनी में शाम को पढ़ाई करने से बेहतर शिक्षा के दरवाज़े खुले हैं।"

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना : एक नई उड़ान

मोइरांगथेम जैसे युवाओं की कोशिशों को केंद्र सरकार की 'पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' से नई रफ़्तार मिल रही है। इस योजना के तहत, सरकार सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, लाभार्थी परिवारों को सोलर पैनल लगवाने के लिए क़रीब 75,000 से 80,000 रुपये की सब्सिडी (आर्थिक मदद) दे रही है।

जब ज़मीनी प्रयास और सरकारी नीतियाँ मिल जाती हैं तो बदलाव बड़ा होता है। इस योजना के महत्त्व पर मोइरांगथेम कहते हैं:

"पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना जैसी सरकारी पहल बहुत अहम है क्योंकि यह वो आर्थिक मदद और नीतिगत सहयोग देती है जिससे ज़मीनी प्रयासों को मज़बूती मिलती है। जब राष्ट्रीय कार्यक्रम स्थानीय पहलों के साथ मिलते हैं तो एक बड़ी ताक़त बनती है जिससे परिवारों का ख़र्च कम होता है और अक्षय ऊर्जा (Renewable Energy) पर उनका भरोसा बढ़ता है।"

युवाओं के लिए संदेश

मणिपुर की वादियों में आया यह बदलाव इस बात का प्रमाण है कि अगर इरादे मज़बूत हों तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं। मोइरांगथेम सेठ देश के उन युवाओं के लिए एक मिसाल हैं जो समाज में बदलाव लाना चाहते हैं। उनका संदेश सीधा और दिल को छू लेने वाला है :

"बदलाव की शुरुआत हिम्मत और दृढ़ता से होती है। सही हालात का इंतज़ार न करें– जो है, जहाँ हैं, वहीं से शुरुआत करें। अगर आप इनोवेशन को करुणा (Compassion) के साथ जोड़ दें, तो आप ज़िंदगियाँ बदल सकते हैं। आज आपका उठाया हर छोटा क़दम आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता रोशन करेगा।"

आज 'पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' और मोइरांगथेम जैसे नायकों के कारण मणिपुर के सुदूर गाँवों में न सिर्फ़ बल्ब जल रहे हैं बल्कि लोगों की उम्मीदें भी रोशन हो रही हैं।

कुलदीप कृष्ण सिद्धा (जेकेएएस)
निदेशक
अभिलेखागार, पुरातत्व और संग्रहालय,
जम्मू और कश्मीर

फावड़े का प्रथम प्रहार

ज़ेहानपोरा, बारामूला (जम्मू और कश्मीर) में पुरातात्विक खुदाई

ज़ेहानपोरा, बारामूला में पहली बार हुई पुरातात्विक खुदाई, हमारे विभाग के अलावा जम्मू और कश्मीर के इतिहास में भी अपनी तरह की पहली खुदाई है। यही कारण है कि इस लेख का शीर्षक 'फावड़े का प्रथम प्रहार (First Act of the Spade)' दिया गया है।

बारामूला में ज़ेहानपोरा भौगोलिक और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण इलाक़ा है क्योंकि ऐतिहासिक रूप से यह कश्मीर घाटी में उत्तर-पश्चिमी प्रवेश मार्ग रहा था जो पारम्परिक रूप से इस क्षेत्र को गांधार और मध्य एशिया से जोड़ता था। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बारामूला के 'प्रस्तर द्वारों' से घाटी में प्रवेश करने और यहाँ अनेक स्तूप तथा मठ होने का वर्णन करने के अलावा बारामूला में उश्कुर के एक प्रमुख विहार में निवास करने का उल्लेख किया है।

हमारे विभाग से अपने तकनीकी ज्ञान और इससे सम्बंधित विशेषज्ञता आगे बढ़ाने के उद्देश्य से पुरातात्विक अनुसंधान, अन्वेषण, संरक्षण, सम्वर्द्धन तथा पुरातात्विक स्थलों के प्रलेखन में सहयोग और सहभागिता के लिए कश्मीर विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ़ सेंट्रल एशियन स्टडीज़ के साथ एक सहमति ज्ञापन (MoU) किया है। देश में यह अपनी तरह की अनूठी पहल है जिसमें एक सरकारी विभाग और एक शैक्षणिक संस्थान अपने संसाधनों और समन्वय से पुरातात्विक खुदाई कर रहा है।

प्राकृतिक रूप से बनी मिट्टी की हर एक परत उजागर करने के लिए खुदाई की सोची-समझी और क्रमबद्ध प्रक्रिया अपनाई गई। प्रतिदिन की खुदाई के अंत में फोटोग्राफिक अभिलेख तैयार किया गया, जिसमें मिट्टी में होने वाले परिवर्तनों, संरचनात्मक विशेषताओं तथा प्राप्त पुरावशेषों के दस्तावेज़ तैयार किए गए। खुदाई में मिली सभी अहम वस्तुओं की सटीक जानकारी निर्धारित की गई और उन्हें स्थल पर ही फोटो खींच कर तथा हाथ से रेखाचित्र बना कर दर्ज किया गया।

खुदाई में मिला सबसे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य एक 'डायपर-पैबल/रबल दीवार' है जो पूर्व-पश्चिम दिशा में समानांतर फैली है। यह किसी विशाल स्थापत्य परिसर की आधारशिला होने का संकेत देती है। इसका घुमाव और संरेखण तथा अन्य सम्बंधित संरचनात्मक विशेषताएँ इस बात की प्रबल पुष्टि करती हैं कि यह एक **अर्धवृत्ताकार चैत्य या प्रार्थना सभागार** का हिस्सा रही होगी। यह इससे पहले श्रीनगर के हरवान स्थल में मिले कश्मीरी स्थापत्य का अपेक्षाकृत दुर्लभ रूप है। इसके अतिरिक्त, अन्य साक्ष्यों में बड़ी तादाद में ईंटों के टुकड़े, चूना पलस्तर वाली सतहें तथा बड़े शिलाखंड शामिल हैं जिनमें कुछ ध्वस्त स्तम्भ या सुपर-स्ट्रक्चरल तत्त्व हैं।

मुख्य स्तूप के निकट की गई खुदाई में मज़बूती से बना पुश्ता (बट्रेस) तथा चूना पलस्तर की नींव मिली जो पर्यावरणीय क्षरण/दबाव का सामना करने के उद्देश्य से अपनाई गई उन्नत अभियांत्रिक तकनीक दर्शाती है। खुदाई के दौरान एक लगभग

ज़ेहानपोरा बारामूला स्थल

पूर्ण मानव कंकाल भी मिला। उसकी टेम्पोरल बोन (कर्णास्थि) के पेट्रस भाग को डीएनए विश्लेषण के लिए एकत्र किया गया है, जिससे आनुवांशिक वंशावली और जनसंख्या इतिहास के पुनर्निर्माण में मदद मिलेगी। इस खोज ने उस काल में प्रचलित अंत्येष्टि प्रथाओं के प्रति भी जिज्ञासा उत्पन्न की है। इसके अतिरिक्त, खुदाई में मिट्टी के बर्तन (पॉटरी), कोयला, पशुओं की हड्डियाँ, सेरेमिक, टेराकोटा तथा धातु के बने पुरावशेष भी बड़ी संख्या में मिले हैं जिनमें लोहे की कीलें, पिन, ब्रैकेट, छड़ें, ताँबे की पिन और ताँबे की बालियाँ शामिल हैं। खुदाई में अब तक मिली अन्य उल्लेखनीय वस्तुओं में काँच की चूड़ियों के टुकड़े, एक कौड़ी शंख

बारामूला स्थित स्तूप टीले के अवशेषों की तस्वीर (1925), गिमे संग्रहालय, पेरिस, फ्रांस

जेहानपोरा स्थल पर टीला

तथा हॉपस्कॉच (स्टापू) का मिट्टी का टुकड़ा शामिल है।

यहाँ मिले अब तक के साक्ष्यों से पता चलता है कि **जेहानपोरा** में एक प्रारम्भिक ऐतिहासिक बसावट रही थी और उस काल के धार्मिक, घरेलू और आनुष्ठानिक गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं। यहाँ मिला अर्धवृत्ताकार चैत्य, उसके समीप स्थित स्तूप तथा अन्य वास्तु अवशेष, इस तथ्य को ठोस रूप से स्थापित करते हैं कि जेहानपोरा एक व्यापक बौद्ध मठीय परिवेश का अंग था। साथ ही, भौतिक साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि यह स्थल तीन प्रमुख कार्य क्षेत्रों – **निर्माण कार्य, आनुष्ठानिक कार्य और आवासीय क्षेत्र में** विभाजित था।

प्रारूप और स्थापत्य के आधार पर यह स्थल मोटे तौर पर प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल से जोड़ा जा सकता है जिसकी सम्भावित तिथि पहली से पाँचवीं शताब्दी के बीच मानी जाती है।

जेहानपोरा स्थल की खुदाई

ज़ेहानपोरा स्थल पर खुदाई के दौरान निकली कुषाण कालीन डायपर-पैबल दीवारें (ग्रिड लेआउट में)

निर्माण तकनीकों तथा प्राप्त पुरावशेषों की, कश्मीर के हरवान और उश्कुर जैसे अन्य बौद्ध स्थलों से काफ़ी समानता है। फिर भी, रेडियो-कार्बन विश्लेषण से यह कालक्रम और अधिक सटीक रूप से निर्धारित किया जा सकेगा।

इस खुदाई से इस स्थल का पुरातात्त्विक महत्त्व स्पष्ट रूप से रेखांकित होता है, विशेषकर कश्मीर की बौद्ध सांस्कृतिक भौगोलिक संरचना के संदर्भ में **बारामूला-झेलम कॉरिडोर** के साथ ज़ेहानपोरा को एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता है। यह स्थल कश्मीर का बौद्ध इतिहास उजागर करते हुए पुष्टि करेगा कि कश्मीर बौद्ध अध्ययन का जीता-जागता समृद्ध केंद्र था। ज़ेहानपोरा के वो टीले, जो कभी साधारण टीले मानकर उपेक्षित रहे थे, वही अब इस इलाके के परिदृश्य को एक पावन एवं ऐतिहासिक स्थल में बदल चुके हैं।

ज़ेहानपोरा की स्थापत्य शैली आज के अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान में मिली गांधार कला से बहुत मिलती-जुलती है। खुदाई से सिद्ध हुआ है कि प्राचीन कश्मीर भारत, मध्य एशिया और रेशम मार्ग के बीच सेतु का कार्य करता रहा था। यह खोज, स्थानीय पहचान को अलगाव की अवधारणा से निकाल कर, विश्व बंधुत्व और दर्शन के ऐसे क्षेत्र की ओर ले जाती है जहाँ विचारों, कला और दर्शन का मुक्त प्रवाह था।

ड्रोन सर्वेक्षण और पुरालेख अनुसंधान (19वीं शताब्दी की फ्रांसीसी तस्वीरें) जैसे आधुनिक तकनीकी साधनों से हुई वैज्ञानिक पुष्टि ने स्थानीय समुदाय को गर्व से भर दिया है। ज़ेहानपोरा, कश्मीर की यादों को मध्यकालीन और प्रारम्भिक आधुनिक काल से भी आगे ले जाकर, लगभग दो सहस्राब्दियों पूर्व तक का विस्तार देते हुए, विशेष रूप से धार्मिक मेलजोल का वह कालखंड उजागर करता है जिसमें बौद्ध मत और बाद में हिंदू धर्म का सह-अस्तित्व रहा तथा परस्पर दोनों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया।

काशी से फ़िजी को

जोड़ती तमिल

भारत का सांस्कृतिक बल उसकी गहन विविधता में है और इसकी एकता की सही झलक तभी दिखाई देती है जब इसके विभिन्न भाग एक-दूसरे के त्योहारों को परम्परागत धूमधाम से मनाते हैं। इसका बड़ा सशक्त उदाहरण है तमिल भाषा में रुचि बढ़ाने की दिशा में हो रही पहल जो देश के भीतर तो हो ही रही है, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी चलाई जा रही है। प्रशांत क्षेत्र के फ़िजी द्वीप से प्राचीन काशी (वाराणसी) नगरी तक बच्चे तमिल भाषा को अपना रहे हैं जिससे सांस्कृतिक सम्बंधों का विकास होने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिल रहा है।

अंतरराष्ट्रीय मोर्चे पर, फ़िजी में रह रहे भारतीय समुदाय के लोग अपने भाषायी मूल से फिर जुड़ने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। जैसा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 129वें सम्बोधन में बताया, फ़िजी की नई पीढ़ी को तमिल भाषा से जोड़ने की ज़ोरदार कोशिशें की जा रही हैं क्योंकि तमिल भाषा उनकी विरासत का बहुत ही अहम अंग है। राकी-राकी के एक स्कूल में तमिल दिवस का आयोजन इस दिशा में खास उपलब्धि रही है। इस अवसर पर बच्चों ने तमिल कविताओं का पाठ किया और तमिल

भाषा में भाषण देकर अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व का खुलकर प्रदर्शन किया। प्रवासी तमिल समुदाय की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए यह पहल अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह बिल्कुल तय हो जाता है कि भौगोलिक दूरियाँ किसी समृद्ध विरासत को कमज़ोर नहीं कर सकतीं।

इधर, भारत में 'काशी तमिल संगमम' (KTS) अभूतपूर्व अंतरदेशीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से लगातार आगे बढ़ रहा है। सरकार की अगुवाई में चल रहे इस कार्यक्रम में तमिलनाडु और काशी की संस्कृतियों के समन्वयन से उत्तर और दक्षिण के बीच की सांस्कृतिक खाई पाटने के महती प्रयास जारी हैं। इस पहल का सबसे प्रभावी पक्ष है वाराणसी के 50 स्कूलों में चलाया जा रहा 'तमिल सीखें-तमिल कराकलम' अभियान।

'तमिल करकलम' वाराणसी में दिसम्बर 2025 में आयोजित काशी

तमिल संगमम (KTS 4.0) के चौथे संस्करण का मुख्य केंद्रीय शिक्षण अंग था। इस संस्करण में तमिल भाषा सीखने को विज़न का प्रमुख भाग बनाया गया था जिससे इस मान्यता को सर्वाधिक महत्त्व मिला कि सभी भारतीय भाषाएँ एक ही साझा भारतीय भाषा परिवार से जुड़ी हैं। इस प्रकार, यही सीधा-सरल और सशक्त संदेश मिलता है कि 'भाषायी विविधता सांस्कृतिक एकता को सशक्त बनाती है।'

यह आयोजन 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' मिशन के तहत किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य वाराणसी में स्कूली बच्चों को तमिल सिखाना था। यह प्रयास तमिलनाडु के उन शिक्षण संस्थानों और भाषा विशेषज्ञों के सहयोग से चलाया गया था जो कक्षाएँ लेने के वास्ते वहाँ से वाराणसी आए थे। पाठ्यक्रम बातचीत करने की बुनियादी जानकारी देने और सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने के अनुसार तैयार किया गया था।

इस कार्यक्रम के गहरे प्रभाव का ठीक-ठीक अंदाज़ा इन युवा/बाल विद्यार्थियों की जुबानी सुनकर ही लगाया जा सकता है। इस आशय के वीडियो में वाराणसी के उदय प्रताप इंटर कॉलेज के

विद्यार्थी पवन सिंह और शिदान श्रीवास्तव ने काशी तमिल संगमम के तहत शिक्षिका संध्या रानी से तमिल सीखने पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा प्रधानमंत्री के प्रति आभार जताया कि उन्होंने यह मौका उन्हें दिया। एक अन्य विद्यार्थी प्रियांशु वर्मा ने बताया कि कैसे 'मन की बात' में उल्लेखित पहल से वे भाषा तक पहुँच गए। सेंट मेरी स्कूल की छात्रा राशि ने बताया कि इस कार्यक्रम से हिंदी भाषी बच्चों में वास्तव में प्रसन्नता और गर्व का भाव आया है और यह नीति उनके लिए व्यक्तिगत सफलता बन गई है।

इन दोनों प्रयासों के बीच गहरा तालमेल है। फ़िजी में संरक्षण कार्य चल रहा है ताकि विदेशी भूमि में भी सांस्कृतिक पहचान बरकरार रखी जा सके जबकि काशी में समन्वयन का कार्य

किया जा रहा है जिसके तहत भारत के विविधतापूर्ण समाज के बीच आपसी समझ बढ़ाने के प्रयास चल रहे हैं। दोनों ही पहलों में पाठ्य पुस्तकों से आगे जाकर भाषा के साथ भावनात्मक और आयोजनात्मक सम्बंध बनाने की दिशा में शिक्षा दी जाती है। इन प्रयासों से तमिल केवल शिक्षा का विषय न रहकर साझी विरासत के साथ जीने का अनुभव कराने का माध्यम बन गई है।

इसके नतीजे बहुत शानदार रहे हैं। एक तो इनसे भारत की वैश्विक पहचान को बल मिलता है क्योंकि प्रवासी भारतीयों को अपने पूर्वजों की सही जानकारी प्राप्त होती है तथा दूसरे, भारत के विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच आपसी समझ तथा जिज्ञासा बढ़ने से राष्ट्रीय एकता को भी बल मिलता है। जब वाराणसी में कोई बच्चा तमिल सीखता है तो क्षेत्रीय अवरोध समाप्त होकर अपने ही देश के किसी अन्य भाग की संस्कृति को जानने-समझने का भाव जागृत होता है। जैसा कि प्रधानमंत्री ने भी कहा था कि 'भाषा की शक्ति में यह नई रुचि ही तो भारत की वास्तविक एकता है।' और इससे बढ़कर यह कि युवाओं को विश्व की सबसे प्राचीन एवं साहित्यिक भाषाओं में शामिल तमिल भाषा जानने का गौरव प्राप्त हो रहा है।

"काशी तमिल संगमम के तहत जो हम लोगों ने तमिल सीखी, वह बहुत अच्छा लगा। इस अवसर के लिए हम प्रधानमंत्री का धन्यवाद करना चाहते हैं।"

-पवन सिंह, कक्षा 9, उदय प्रताप इंटर कॉलेज, वाराणसी

"हमें यहाँ पर काशी तमिल संगमम के अंतर्गत बहुत अच्छी शिक्षा दी गई है। तमिल भाषा हमें बहुत अच्छी लगी, जिसकी वजह से हमें बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। तमिल सिखाने के लिए संध्या रानी मैम आईं थीं, जिन्होंने हमें बहुत अच्छे से शिक्षा दी।"

-शिदान श्रीवास्तव, कक्षा 8, उदय प्रताप इंटर कॉलेज, वाराणसी

"मुझे ये भाषा पढ़कर बहुत अच्छा लगा। मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद करना चाहूँगा कि उन्होंने ये अवसर प्रदान किया कि हर बच्चा तमिल सीख पाए। इस पहल की चर्चा प्रधानमंत्री जी ने मन की बात में भी की, इसलिए मैं उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहूँगा ।"

- प्रियांशु वर्मा, कक्षा 9, उदय प्रताप इंटर कॉलेज, वाराणसी

"वनक्कम! मेरा नाम राशि है, मैं सेंट मैरी केंट स्कूल की क्लास 8बी में पढ़ती हूँ। मुझे वाराणसी में तमिल संगमम 4.0 में सरकार द्वारा दी गई तमिल क्लास के बारे में बात करके बहुत खुशी हो रही है।"

- राशि, कक्षा 8, सेंट मैरी कैंट

पार्वती गिरि

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम ओड़िया नायिका

"ऐसी ही एक स्वतंत्रता सेनानी हैं ओडिशा की पार्वती गिरि जी। जनवरी 2026 में उनकी जन्म शताब्दी मनाई जाएगी। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में हिस्सा लिया था। साथियो, आज़ादी के आंदोलन के बाद पार्वती गिरि जी ने अपना जीवन समाज सेवा और जनजातीय कल्याण को समर्पित कर दिया था। उन्होंने कई अनाथालयों की स्थापना की। उनका प्रेरक जीवन हर पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा।"

"मूँ पार्वती गिरि जिंकु श्रद्धांजलि अर्पण करुछी।"
"मैं पार्वती गिरि जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

- पार्वती गिरि (19 जनवरी, 1926 – 17 अगस्त, 1995) को मानव जाति के प्रति उनकी निस्वार्थ सेवा के कारण 'पश्चिमी ओडिशा की मदर टेरेसा' कहा जाता है।
- वे अपने चाचा रामचंद्र गिरि के साथ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध रणनीति बना रहे कांग्रेस नेताओं की बैठकों में जाया करती थीं। उन्होंने 11 वर्ष की आयु में ही स्कूल छोड़ दिया था।
- अपना पूरा जीवन स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित करने हेतु 1938 में उन्होंने घर छोड़ दिया।
- 1940 में, उन्होंने गाँव-गाँव घूमकर लोगों को गाँधीजी के खादी आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्वयं बुनाई और हस्तशिल्प की कला सीखी।
- उन्हें दो साल जेल की सज़ा हुई क्योंकि उन्होंने बरगढ़ के एसडीओ की कुर्सी पर न्यायाधीश की तरह बैठकर अपने साथ मौजूद लड़कों को एसडीओ को रस्सी से बाँधने का आदेश दिया था, जैसे कि वह कोई अपराधी हो।
- एक बार वे बरगढ़ की अदालत में गईं और वकीलों को अदालत खाली करने और कानून के मामलों में अंग्रेज़ों के साथ सहयोग बंद करने का आदेश दिया।
- स्वतंत्रता संग्राम और समाज के प्रति उनके योगदान के लिए, जिसमें ओडिशा में 1951 के अकाल का समय भी शामिल है, 1984 में उन्हें समाज कल्याण विभाग द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1988 में उन्हें सम्बलपुर विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि भी प्राप्त हुई थी।

डॉ. राजीव बहल
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) तथा सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग में सावधानी और उत्तरदायित्व की अपील

एंटीबायोटिक ने आधुनिक चिकित्सा में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। लेकिन उनके दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग के कारण उनकी प्रभावशीलता तेज़ी से कम होती जा रही है, जिससे एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) का वैश्विक संकट गहरा रहा है। प्रतिरोधी संक्रमणों के कारण अस्पताल में भर्ती रहने की अवधि बढ़ जाती है, स्वास्थ्य-सेवा की लागत बढ़ती है और यह जानलेवा तक साबित होते हैं जिससे संक्रामक रोगों से लड़ने में अब तक हुई प्रगति ख़तरे में है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली एंटीबायोटिक दवाओं का कमज़ोर या बेअसर होने का स्तर अत्यंत चिंताजनक हो गया है। ई. कोलाई, क्लेब्सिएला, स्टैफिलोकोकस ऑरियस और साल्मोनेला जैसे बैक्टीरिया से होने वाले सामान्य संक्रमणों के उपचार में प्रथम पंक्ति ही नहीं, दूसरी पंक्ति के एंटीबायोटिक्स भी असर नहीं कर पा रहे हैं। इनका यह प्रतिरोध केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं है बल्कि समुदायों के स्तर पर भी देखा जा रहा है। संस्थान की रिपोर्ट में 'अंतिम विकल्प' मानी जाने वाली दवाओं के प्रति भी बढ़ता प्रतिरोध रेखांकित किया गया है जिसके कारण उपचार के विकल्प सीमित हो जाते हैं और बीमारी की अवधि लम्बी होने, लागत बढ़ने तथा मृत्यु का जोखिम बढ़ने की आशंका रहती है।

एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग ही एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रमुख कारणों में से एक माना गया है। एंटीबायोटिक के अनुचित उपयोग के कारण कुछ बैक्टीरिया नष्ट होने के बजाय शरीर में जीवित रह जाते हैं। यही जीवित बचे बैक्टीरिया, अपने को नई परिस्थिति के अनुरूप ढाल कर, दवा के प्रतिरोधी बन जाते हैं। समय बीतने के साथ इन प्रतिरोधी बैक्टीरिया की संख्या बढ़ने और फैलने से ऐसे संक्रमण होते हैं जिनका इलाज करना और अधिक कठिन हो जाता है। असल में एंटीबायोटिक का दुरुपयोग, बैक्टीरिया को उन दवाओं से ही लड़ने को 'प्रशिक्षित' कर देता है जो कभी उन्हें मार डालती थीं।

एंटीबायोटिक दवाओं का अनुचित उपयोग कई तरह से होता है, जैसे सर्दी-ज़ुक़ाम, फ्लू या कोविड-19 जैसी वायरल बीमारियों में एंटीबायोटिक लेना; लक्षणों में सुधार

होते ही एंटीबायोटिक लेना बंद कर देना; बची हुई एंटीबायोटिक दवाओं को भविष्य में उपयोग के लिए सम्भाल कर रखना; परिवार के सदस्यों के साथ एंटीबायोटिक दवाएँ साझा करना; बिना चिकित्सक की सलाह के पुराना पर्चा इस्तेमाल करना; तथा ग़लत ख़ुराक या अनियमित समय पर दवा लेना। ऐसा करने से एंटीबायोटिक दवाओं के लिए शरीर में प्रतिरोध बढ़ता है यानी दवा बेअसर हो जाती है और उपचार विफल होने का जोखिम बढ़ जाता है।

हर बीमारी में एंटीबायोटिक दवाओं की ज़रूरत नहीं होती। हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने भी आह्वान किया है कि 'मेडिसन के लिए गाइडेंस और एंटीबायोटिक्स के लिए डॉक्टर की ज़रूरत है।' लक्षणों, चिकित्सकीय परीक्षण और कभी-कभी प्रयोगशाला जाँच के आधार पर यह निर्णय डॉक्टरों को ही करना चाहिए कि एंटीबायोटिक की आवश्यकता है या नहीं, अगर ज़रूरत है तो कौन-सी एंटीबायोटिक उपयुक्त होगी और उसे कितने समय तक लिया जाना चाहिए।

डॉक्टर के बिना बताए एंटीबायोटिक्स लेना अप्रभावी, हानिकारक और ख़तरनाक हो सकता है—यह गम्भीर बीमारी के लक्षण तक छिपा सकता है, शरीर में दुष्प्रभाव पैदा कर सकता है और शरीर में दवा के लिए प्रतिरोध बढ़ा सकता है। लोगों के बीच प्रतिरोधी बैक्टीरिया का प्रसार भोजन, पानी, अस्पताल और पर्यावरण के माध्यम से होता है। इसका अर्थ यह है कि किसी एक व्यक्ति द्वारा एंटीबायोटिक दवाओं का दुरुपयोग पूरे समुदाय में प्रतिरोध को जन्म दे सकता है। इससे स्वास्थ्य सेवा की

लागत बढ़ती है, अस्पतालों पर दबाव बढ़ता है, कार्यबल की उत्पादकता घटती है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा को ख़तरा पैदा होता है। इसलिए एंटीबायोटिक प्रतिरोध केवल व्यक्तिगत समस्या ही नहीं, एक सामाजिक चुनौती है। यदि एंटीबायोटिक प्रतिरोध लगातार बढ़ता रहा, तो सामान्य संक्रमण भी असाध्य हो सकते हैं और नियमित शल्य क्रियाएँ, प्रसव, कैंसर का उपचार तथा अंग प्रतिरोपण अत्यधिक जोखिम वाले बन जाएँगे। परिणाम यह होगा कि अस्पताल में भर्ती रहने की अवधि लम्बी और अधिक महँगी हो जाएगी तथा साधारण संक्रमणों से होने वाली मौतों की संख्या बढ़ सकती है। हमें डर है कि कहीं हम फिर से उसी दौर में न लौट जाएँ जब मामूली संक्रमण भी जानलेवा साबित हो सकते थे।

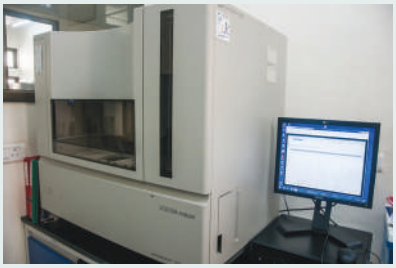

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) अपनी निगरानी, बैक्टीरियल संक्रमणों और एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध की पहचान के लिए नए नैदानिक परीक्षणों के विकास, एंटीबायोटिक दवाओं के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यान्वयन अनुसंधान तथा एएमआर से निपटने की नई रणनीतियों का विकास करने वाली व्यापक पहलों के माध्यम से, भारत के AMR अनुसंधान एजेंडे का नेतृत्व कर रही है। इसका प्रमुख कार्यक्रम, एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध निगरानी एवं अनुसंधान नेटवर्क (AMRSN), प्राथमिक रोगजनक जीवाणु/विषाणु (पैथोजेन) में प्रतिरोध के पैटर्न पर राष्ट्रीय स्तर का डाटा तैयार करता है, जबकि डिजिटल प्लेटफॉर्म, मानकीकृत डाटा संग्रह और रिपोर्टिंग को मज़बूती देने का काम करते हैं। इस डाटा से, उपचार सम्बंधी

रणनीतियों का मार्गदर्शन किया जाता है। यह नेटवर्क प्रतिरोध के तंत्र, नैदानिक विधियों तथा नई दवाओं के विकास पर उन्नत अनुसंधान भी करता है। ICMR ने अस्पताल-आधारित एंटीमाइक्रोबियल स्टूअर्डशिप कार्यक्रमों पर अनुसंधान की पहल की है, साक्ष्य-आधारित उपचार दिशानिर्देश विकसित किए हैं तथा एंटीबायोटिक के उपयोग और संक्रमण नियंत्रण में सुधार के लिए कार्यान्वयन अनुसंधान को समर्थन दिया है। ICMR लक्षित वित्तपोषण, बहुकेंद्रित अध्ययनों तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सहयोग से यह सुनिश्चित कर रहा है कि भारत में AMR का अनुसंधान, जनस्वास्थ्य की आवश्यकताओं के अनुरूप हो और राष्ट्रीय नीतियों व कार्ययोजनाओं को सीधे दिशा दे सके।

सभी नागरिक कुछ बुनियादी नियमों का पालन करके एंटीबायोटिक का प्रतिरोध क़ाबू करने में योगदान दे सकते हैं, जैसे केवल योग्य डॉक्टर के कहने पर ही

एंटीबायोटिक्स लेना, बताई गई ख़ुराक का पूरा कोर्स लेना तथा एंटीबायोटिक्स को ना तो कभी बाँटना और न ही मर्ज़ी से दोबारा उपयोग करना। मरीज़ों को भी डॉक्टरों पर एंटीबायोटिक्स लिखने का दबाव नहीं बनाना चाहिए।

स्वच्छता (हाथ धोना, खाद्य सुरक्षा) अपनाने और संक्रमणों से बचाव का टीका लगवा कर, एंटीबायोटिक्स की आवश्यकता पड़ने की सम्भावना कम की जा सकती है। लोगों के यह छोटे-छोटे किंतु ज़िम्मेदारी वाले क़दम, भावी पीढ़ियों के लिए एंटीबायोटिक्स को सुरक्षित रख सकते हैं।

परम्परा से परिवर्तन तक

समुदायों को सशक्त बनाते भारतीय कला और कौशल

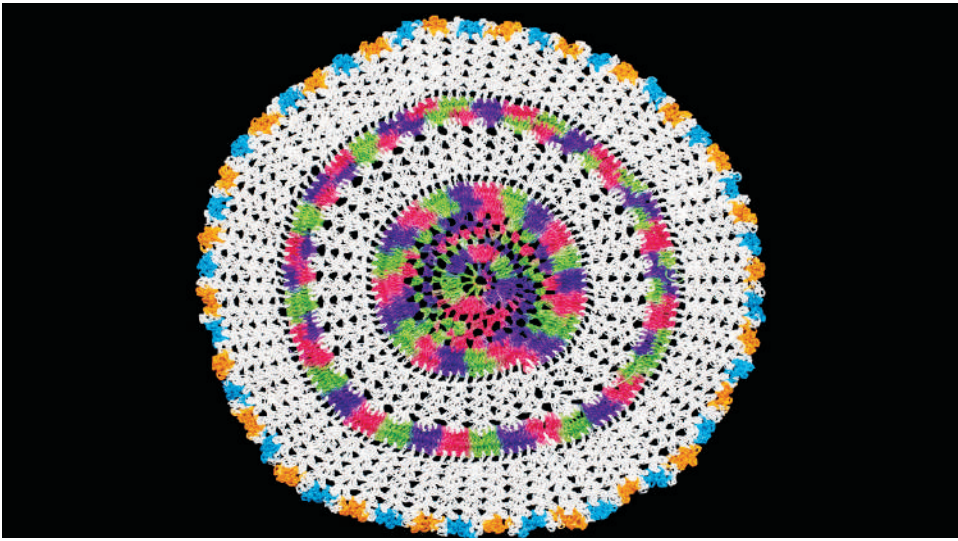

भारत की पारम्परिक कलाएँ और सांस्कृतिक प्रथाएँ न केवल पहचान और विरासत की प्रतीक हैं, बल्कि आर्थिक सशक्तीकरण के शक्तिशाली साधन भी हैं। हाल ही में प्रसारित 'मन की बात' के एक एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऐसे तीन प्रेरणादायक प्रयासों पर प्रकाश डाला – आंध्र प्रदेश की नरसापुरम लेस कला, बांस और लकड़ी के हस्तशिल्पों का सतत उद्यमों में रूपांतरण और मणिपुर में पुष्पकृषि पहल। ये सभी कहानियाँ दर्शाती हैं कि कैसे 'परम्परा' नवाचार, बाज़ार तक पहुँच और सरकार के सहयोग से समावेशी आर्थिक विकास का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाती है।

नरसापुरम लेस को जीआई टैग की मान्यता

नरसापुरम लेस, जिसे 'नरसापुर क्रोशिया लेस' के नाम से भी जाना जाता है, आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी क्षेत्र में स्थित नरसापुर की एक पारम्परिक हस्तनिर्मित क्रोशिया लेस कला है, जिसकी विरासत 150 वर्षों से अधिक पुरानी है। यह कला मुख्य रूप से स्थानीय किसान समुदायों की महिला कारीगरों द्वारा की जाती है। इसमें महीन सूती, कभी-कभी रेशम या सिंथेटिक धागों और नाज़ुक क्रोशिया सुइयों का उपयोग करके जटिल पुष्प, ज्यामितीय और बूटा रूपांकन बनाए जाते हैं, जिन्हें बाद में

रूमाल, चादर, कुशन कवर और टेबल रनर आदि में रूपांतरित किया जाता है। इसकी समृद्ध विरासत ने ऐतिहासिक कठिनाइयों का सामना किया है और यह वैश्विक मान्यता प्राप्त एक कुटीर उद्योग के रूप में विकसित हुई है, जिसका अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों में काफी निर्यात होता है।

नरसापुरम लेस के लिए जीआई टैग एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आया है। भौगोलिक संकेत (GI) टैग किसी उत्पाद को उसके मूल स्थान से कानूनी रूप से जोड़ता है, जिससे उसकी विशिष्टता और प्रतिष्ठा सुरक्षित रहती है। 2024 में जीआई प्रमाणपत्र प्राप्त करने के बाद कारीगरों को कई तरह से लाभ हुआ है, जैसे कि प्रामाणिकता, नकल से सुरक्षा, ब्रांड वैल्यू के कारण बेहतर मूल्य और नए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों तक पहुँच।

मणिपुर की हस्तकलाः सुदूर गाँवों से राष्ट्रीय बाज़ारों तक

मणिपुर में बाँस और लकड़ी से बनी पारम्परिक हस्तकलाएँ लम्बे समय से रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा रही हैं- इनका उपयोग भंडारण, खेती, अनुष्ठानों और वास्तुकला में किया जाता है। कारीगर टोकरियाँ, थालियाँ, टोपियाँ,

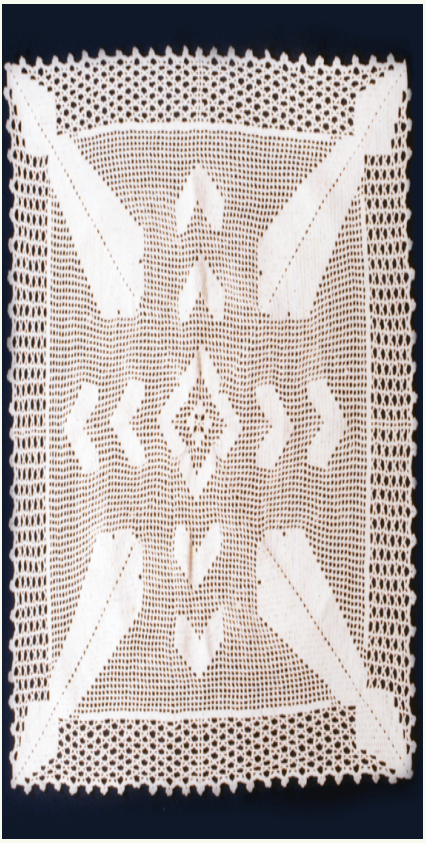

फर्नीचर, सजावटी सामान और उपयोगी वस्तुएँ बनाते हैं जिनमें उपयोगिता और स्वदेशी डिज़ाइन का अनूठा मेल होता है।

मार्गरेट रामथारसिएम जैसी उद्यमियों ने दिखाया है कि कैसे ये शिल्प समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बना सकते हैं। कारीगरों को संगठित करके, वैश्विक-स्तर पर मिली जानकारी से प्रेरित नए डिज़ाइनों को पेश करके और विपणन की ज़िम्मेदारी लेकर, उन्होंने कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है और पारम्परिक कौशलों को उनका सम्मान वापस दिलाया है।

फेरज़ॉल ज़िले के एक छोटे से गाँव परबंग की रहने वाली मार्गरेट के उद्यम का मुख्य उद्देश्य आजीविका सृजन करना है। वे कहती हैं, "पहले कुछ कारीगर मुश्किल से 2,500-3,000 रुपये प्रति माह कमा पाते थे। हमारे साथ काम करने के बाद, उनमें से कई अब नियमित रूप से 20,000-30,000 रुपये कमा रहे हैं। हस्तशिल्प पैसा कमाने का एक बहुत अच्छा तरीका है, इससे सम्मान मिलता है।" अधिक से अधिक युवाओं को इस क्षेत्र में लाने के लिए वे साल में कई बार मुफ्त प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। वे बताती हैं- "प्रशिक्षण के बाद, वे जो कुछ भी बनाते हैं, हम उसे खरीद लेते हैं। उन्हें विपणन की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हम उसका ध्यान रखते हैं।"

मणिपुर में पुष्पकृषिः परम्परा और बाज़ार का संगम

मणिपुर में चोखोने कृचेना ने पारम्परिक कृषि ज्ञान को आधुनिक पुष्पकृषि के साथ मिलाकर खेती को एक नया रूप दिया है। पारम्परिक कृषि में गहरी जड़ें जमाए परिवार से आने वाली कृचेना कहती हैं, "मैंने इसकी खूबियाँ और कमियाँ दोनों देखीं। जहाँ पारम्परिक कृषि श्रम-प्रधान है और अक्सर कम लाभ देती है, वहीं पुष्पकृषि हमारे क्षेत्र के लिए बेहतर आर्थिक अवसर प्रदान करती है। फूल उगाना हमेशा से मेरा जुनून रहा है, और पुष्पकृषि में विस्तार करने से मुझे अपनी कृषि विरासत का सम्मान करते

हुए किसानों के लिए अधिक टिकाऊ और लाभकारी आजीविका सृजित करने का अवसर मिला।"

मिट्टी, ऋतुओं, जलवायु और फसल की देखभाल के बारे में उनकी पारम्परिक समझ नवाचार की नींव बनी। वे बताती हैं, "इस ज्ञान ने मुझे आधुनिक पद्धतियों को अपनाते समय सोच-समझकर निर्णय लेने में मदद की। पारम्परिक ज्ञान को नवाचार और बाज़ार-उन्मुख दृष्टिकोणों के साथ मिलाकर मैं उत्पादकता बढ़ाने, जोखिमों को कम करने और धीरे-धीरे टिकाऊ तरीके से काम का विस्तार करने में सक्षम हुई।"

वे कहती हैं कि पुष्पकृषि ने समुदाय में ठोस बदलाव किया है। "पारम्परिक फसलों की तुलना में अधिक और त्वरित प्रतिफल प्रदान करके इसने आय के नए और टिकाऊ अवसर पैदा किए हैं। इसने वर्ष भर आजीविका प्रदान की है और किसानों, विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाया है, क्योंकि इसने फूलों की खेती को निर्वाह खेती के बजाय एक व्यवहार्य उद्यम में बदल दिया है।" स्थानीय रूप से उगाई जाने वाली फूलों की किस्मों को प्राप्त करके और किसानों को सीधे बेहतर बाज़ारों से जोड़कर, उनकी पहल ने सेनापति ज़िले में आय में वृद्धि की है और स्थानीय रोज़गार सृजित किया है।

आंध्र प्रदेश और मणिपुर की ये कहानियाँ मिलकर एक व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन को दर्शाती हैं, जहाँ भारत की पारम्परिक कलाओं और कौशलों को आर्थिक प्रगति के इंजन के रूप में पुनर्जीवित किया जा रहा है। चाहे वह नरसापुरम लेस की विरासत हो, मणिपुर के दूरदराज के गाँवों में बाँस और लकड़ी के हस्तशिल्प का पुनरुद्धार हो, या पुष्पकृषि के माध्यम से कृषि का रूपांतरण हो, प्रत्येक पहल यह दर्शाती है कि नवाचार, उद्यमिता और नीतिगत समर्थन से पारम्परिक कौशल किस प्रकार सम्मानजनक आजीविका और समावेशी विकास का सृजन कर सकते हैं।

रण उत्सव

भारत की जीवंत संस्कृति का जश्न

ज़रा सोचिए, जहाँ तक आपकी नज़र जाए, बस सफ़ेद ज़मीन और नीला आसमान दिखाई दे रहा हो। जहाँ ख़ामोशी में भी संगीत हो और बंजर ज़मीन पर भी रंगों का मेला लगा हो। यह कोई सपना नहीं बल्कि गुजरात के कच्छ का 'रण उत्सव' है। यह सिर्फ़ एक त्योहार नहीं बल्कि प्रकृति, संस्कृति और मानवता की ख़ूबसूरती का एक बेमिसाल संगम है।

हर साल सर्दियों में कच्छ का रेगिस्तान एक अलग आकर्षक रूप धारण कर लेता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में बिल्कुल सही कहा है कि हमारे देश की सबसे ख़ास बात यह है कि यहाँ साल भर उत्सव का माहौल बना रहता है। 'रण उत्सव' इसी कड़ी में भारत की विविधता को दुनिया के सामने पेश करने वाला एक शानदार माध्यम है।

क़ुदरत का करिश्माः सफ़ेद रण

कच्छ के रण को देखना किसी जादू भरे एहसास से कम नहीं है। दिन के उजाले में नमक से ढका यह रेगिस्तान सूरज की रोशनी में हीरे की तरह चमकता है। लेकिन

असली जादू तो रात में होता है। जैसा कि प्रधानमंत्री जी ने बताया, "रात के समय जब सफ़ेद रण के ऊपर चाँदनी फैलती है, वहाँ का दृश्य अपने-आप में मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता है।"

पूर्णिमा की रात को यहाँ का नज़ारा ऐसा होता है जैसे ज़मीन ने सफ़ेद चादर ओढ़ ली हो। यह सुकून और शांति का एक ऐसा एहसास है जिसे लफ़्ज़ों में बयाँ करना मुश्किल है। यहाँ आकर इंसान अपनी रोज़मर्रा की उलझनों को भूलकर प्रकृति के सौंदर्य में खो जाता है।

संस्कृति और हुनर का संगम

रण उत्सव सिर्फ़ प्राकृतिक सुंदरता तक सीमित नहीं है बल्कि यह कच्छ की विरासत का भी एक अद्भुत आईना है। यहाँ की बंजर ज़मीन पर यहाँ के लोग अपने रंगों से जान फूँक देते हैं। यह उत्सव स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों के लिए एक बड़ा मंच है। जब पर्यटक यहाँ आते हैं और स्थानीय बाज़ार से ख़रीदारी करते हैं, तो न सिर्फ़ उन्हें नायाब वस्तुएँ मिलती हैं बल्कि इससे स्थानीय कारीगरों की रोज़ी-रोटी भी परवान चढ़ती है। यह 'वोकल फॉर लोकल' का सबसे बेहतरीन उदाहरण है।

शाम होते ही यहाँ लोक संगीत और नृत्य की महफ़िल सजती है। लोक कलाकारों की आवाज़ और वाद्य यंत्रों की धुन सीधे दिल में उतरती है। यहाँ की मेहमानवाज़ी ऐसी है कि आप ख़ुद को पर्यटक नहीं बल्कि परिवार का हिस्सा महसूस करेंगे।

दिलों को जोड़ता एक त्योहार

रण उत्सव सिर्फ़ घूमने-फिरने की जगह नहीं है बल्कि यह लोगों के दिलों को जोड़ने का काम करता है। जैसा कि

माननीय प्रधानमंत्री ने बताया "पिछले एक महीने में 2 लाख से ज़्यादा लोग रणोत्सव का हिस्सा बन चुके हैं।" देश के कोने-कोने से और दुनिया भर से लोग यहाँ आते हैं।

यहाँ बनी 'टेंट सिटी' अपने-आप में एक अनोखा आकर्षण है। हज़ारों लोग एक साथ रहते हैं, एक-दूसरे की संस्कृति को जानने की कोशिश करते हैं और नए रिश्ते बनाते हैं। जब कश्मीरी, बंगाली और दक्षिण भारतीय पर्यटक एक साथ गुजराती गरबा और डांडिया देखते हैं तो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की तस्वीर और भी साफ़ और ख़ूबसूरत हो जाती है।

रण उत्सव कच्छ की बेहतरीन चीज़ों को एक धागे में पिरोता है। यहाँ आप पारम्परिक मिट्टी के 'भुंगा' घरों, नायाब हैंडीक्राफ्ट और स्थानीय व्यंजनों के ज़ायक़े का लुत्फ उठा सकते हैं। यहाँ की एडवेंचर एक्टिविटीज़, कल्चरल परफॉर्मेंस और लाइट-एंड-साउंड शो,

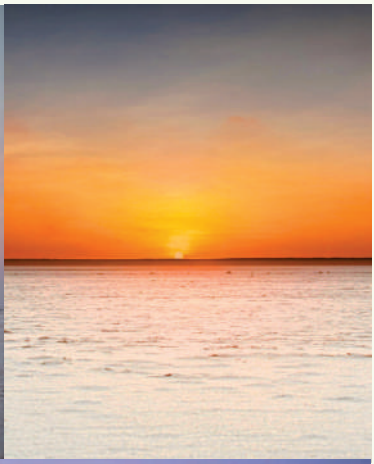

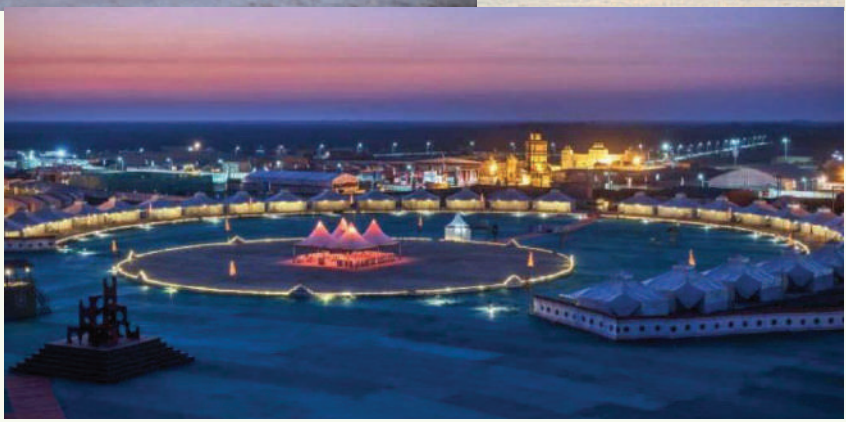

इसे परिवारों के लिए एक ख़ास स्थान बनाते हैं। यहाँ आने वाले सैलानी, धोर्डो के अलावा, आसपास के मशहूर स्थलों जैसे धोलावीरा, 'रोड टू हेवन', लखपत, माता नो मध, नारायण सरोवर, कालो डूंगर, स्मृतिवन और मांडवी की सैर भी कर सकते हैं जो इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य से सराबोर हैं।

इस साल यह उत्सव 23 नवम्बर से शुरू होकर 20 फरवरी तक चलेगा। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने आग्रह किया है, "आपको जब भी अवसर मिले, तो ऐसे उत्सवों में ज़रूर शामिल हों और भारत की विविधता का आनंद उठाएं।" अगर आप भी ज़िंदगी की भागदौड़ से दूर कुछ पल सुकून के बिताना चाहते हैं तो रण उत्सव ज़रूर आएं। यह सिर्फ़ एक 'यात्रा' नहीं है बल्कि एक ऐसा 'अनुभव' है जो ताउम्र आपकी यादों में ताज़ा रहेगा।

भारत की बाल शक्ति @2047
वीर बाल दिव
2025

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

129वाँ संस्करण

ठंडी का ये मौसम व्यायाम के लिए बहुत उपयुक्त होता है, व्यायाम ज़रूर करें।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि कृपया अपनी मनमर्ज़ी से दवाओं का इस्तेमाल करने से बचें।

पिछले एक महीने में अब तक 2 लाख से ज़्यादा लोग रणोत्सव का हिस्सा बन चुके हैं। आपको जब भी अवसर मिले, तो ऐसे उत्सवों में ज़रूर शामिल हों और भारत की विविधता का आनंद उठाएँ।

पिछले 7-8 साल में **'Smart India Hackathon'** में, 13 लाख से ज़्यादा **students** और 6 हज़ार से ज़्यादा **Institutes** हिस्सा ले चुके हैं। मेरा अपने युवा साथियों से आग्रह है कि वे इन **Hackathons** का हिस्सा ज़रूर बनें।

AIIMS, New Delhi
@aiims_newdelhi

In #MannKiBaat, PM Modi warns AMR is making simple infections dangerous.
Dr Hitender Gautam, Prof. of Microbiology at AIIMS, explains how self-medication & overuse are limiting treatment options. Responsible use is a must!

Read: timesofindia.indiatimes.com/india/mann-ki-...

#AIIMSAMRAwareness

Aashish Chandorkar
@c_aashish

"Prime Minister Narendra Modi on Sunday said 2025 was a year of proud milestones for India ?in the field of national security, sports and scientific innovation, with the country's impact visible everywhere.

Addressing his monthly 'Mann Ki Baat' address, Modi also spoke about Operation Sindoor under which Indian armed forces destroyed terror infrastructure and security bases in Pakistan."

Arjun Ram Meghwal
@arjunrammeghwal

2025 की अंतिम मन की बात कार्यक्रम में पीएम मोदी का संदेश: ऑपरेशन सिंदूर भारत के गौरव और एकता का प्रतीक
organiser.org/2025/12/28/332...
@PMOIndia
via NaMo App

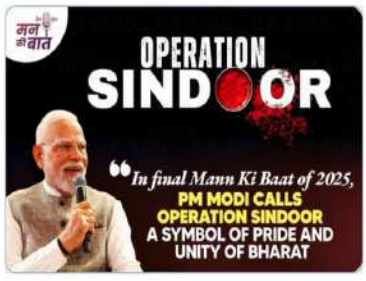

Dr.L.Murugan
@DrLMurugan

In his recent Mann Ki Baat episode, Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi ji highlighted the upcoming Young Leaders Dialogue. On 12 January, the second edition of the Viksit Bharat Young Leaders Dialogue will be held to commemorate Swami Vivekananda's birth anniversary, also celebrated as National Youth Day. The event will bring together young participants from across the nation to present innovative ideas in fitness, science, technology and other fields.

Recently, a nationwide essay writing competition related to the dialogue was held, with TamilNadu securing first place and UttarPradesh second. Platforms such as this effectively harness the potential of India's youth, shaping the future leaders and policymakers of the country.

Fortis Healthcare
@fortis_hospital

Yesterday in 'Mann Ki Baat', Honourable Prime Minister @narendramodi Ji highlighted the growing concern of AMR (Antimicrobial Resistance) and urged citizens to avoid the indiscriminate use of antibiotics or self-medication without proper medical guidance.
As healthcare providers, we recognise the seriousness of rising antibiotic resistance and appreciate the Prime Minister's emphasis on responsible antibiotic use and public awareness on this critical health issue.

@PMOIndia @narendramodi @MoHFW_INDIA @ICMRDELHI

#MannKiBaat #AntibioticResistance #PublicHealth #HealthAwareness #ResponsibleMedicineUse #PMModi #ICMR

Vijay Baghel
@vijaybaghelcg

Show translation
दुनिया भारत को बहुत उम्मीद से देख रही है: 'मन की बात' में पीएम मोदी
thehindu.com/news/national/...

via NaMo App

Jagat Prakash Nadda
@JPNadda

Show translation

ICMR यानी Indian Council of Medical Research ने हाल ही में एक report जारी की है। इसमें बताया गया है कि निमोनिया और UTI जैसी कई बीमारियों के खिलाफ antibiotic दवाएं कमजोर साबित हो रही हैं। हम सभी के लिए यह बहुत ही चिंताजनक है।

ICMR Report के मुताबिक इसका एक बड़ा कारण लोगों द्वारा बिना सोचे-समझे antibiotic दवाओं का सेवन है।

Antibiotic ऐसी दवाएं नहीं हैं, जिन्हें यूं ही ले लिया जाए। इनका इस्तेमाल Doctor की सलाह से ही करना चाहिए।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

Office of Kiren Rijiju
@RijijuOffice

In final Mann Ki Baat of 2025, PM Modi calls Operation Sindoor a symbol of pride and unity of Bharat
organiser.org/2025/12/26/332...

via NaMo App

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

Show translation

Viksit Bharat Young Leaders Dialogue में प्रधानमंत्री श्री @NarendraModi जी के समक्ष युवा रखेंगे nation building के अपने ideas.

#MannKiBaat

Dr. S. Jaishankar
@DrSJaishankar

In today's year ending #MannKiBaat, PM @narendramodi underlined:

#OperationSindoor reaffirmed 🇮🇳's zero-tolerance towards terrorism stance to the world.

Kannada Patashale in Dubai 🇦🇪 keeping Kannada language and culture alive among young expats.

Identification of around 2000 years old Buddhist cultural past of Zehanpora region in Kashmir's Baramulla district, using archives from a French 🇫🇷 museum.

Tamil Day celebration in Raki-Raki region of Fiji 🇫🇯, connecting the young diaspora with their culture.

Do listen: youtube.com/watch?v=xD64_6...

Bhajanlal Sharma
@BhajanlalBjp

Show translation

'मन की बात' में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी की अपील - एंटीबायोटिक दवाएं सिर्फ डॉक्टर की सलाह पर लें।

#MannKiBaat

2025 year of proud milestones: PM Modi

Hails Op Sindoor, sports triumphs, space feat in Mann Ki Baat address

#NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said 2025 was a year of proud milestones for India as he highlighted Operation Sindoor, saying it became a symbol of pride for every Indian and showed the world that the country does not compromise on its security.

Addressing his monthly 'Mann Ki Baat' address, the last in 2025, Modi said the country's impact was visible everywhere in the outgoing year. "2025 was a year of proud milestones for India. Whether in national security, sports, scientific innovation or on the world's biggest platforms, India's impact was visible everywhere," he said.

The prime minister said during Operation Sindoor, images of love and devotion toward 'Maa Bharti' (Mother India) emerged from every corner of the nation and people expressed their emotions and gratitude in their own unique ways.

Modi said the same spirit was witnessed when national song 'Vande Mataram' completed 150 years. The prime minister noted that 2025 has truly been a memorable year for sports, with the men's cricket team clinching the ICC Champions Trophy and the women's cricket team winning the World Cup for the first time.

Modi also said that India has taken a giant leap in the field of science and space, and Shubhanshu Shukla became the first Indian to reach the International Space Station. Today, he said, the world looks toward India with great hope and the biggest reason for this expectation is the country's Youth Power.

PTI

PM cautions against indiscriminate use of antibiotics

Cites ICMR report on antibiotic resistance in his 'Mann Ki Baat' address

#NEW DELHI

Flagging the issue of antibiotic resistance, Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged people not to take such medicines without consulting a doctor.

In his monthly 'Mann Ki Baat' radio address, Modi said the Indian Council of Medical Research (ICMR) recently released a report which said that antibiotics were proving ineffective against many diseases like pneumonia and UTI (Urinary Tract Infections). "This is a matter of great concern for all of us," he said.

According to the report, Modi said, a major reason for this is people's indiscriminate use of antibiotics. He said antibiotics are not medicines that can be taken mindlessly.

He said the medicines should be used only on the doctor's advice.

"Nowadays, people have started believing that just taking a pill would cure all their problems. This is the reason diseases and infections are proving to be too strong for these antibiotics.

"I urge all of you to refrain from using medicines at your own discretion. This is especially important when it comes to antibiotics. I would simply say: Medicines require guidance, and antibiotics require doctors. This practice will prove to be very helpful in improving your health," he said.

PTI

وزیراعظم مودی نے 'من کی بات' میں 2025 کو

کھیلوں کی تاریخی فتوحات کا سال قرار دیا

(یو این آئی)

نئی دہلی: وزیراعظم نریندر مودی نے اتوار کے روز اپنے ماہانہ ریڈیو پروگرام 'من کی بات' کے 129 ویں ایڈیشن کے ذریعے قوم سے خطاب کرتے ہوئے سال 2025 کو ہندوستانی کھیلوں کی تاریخ کا ایک سنہری اور یادگار باب قرار دیا۔ انہوں نے کہا کہ یہ سال نہ صرف شاندار فتوحات کا گواہ رہا بلکہ اس نے کھیلوں کے میدان میں ہندوستان کی بدلتی ہوئی تصویر کو بھی پوری دنیا کے سامنے پیش کیا ہے۔ وزیراعظم نے اپنے خطاب میں مختلف کھیلوں میں ہندوستانی کھلاڑیوں کی غیر معمولی کارکردگی کو سراہتے ہوئے کہا کہ 2025 نے ثابت کر دیا ہے کہ محنت، نظم و ضبط اور ٹیم اسپرٹ کے ساتھ ہندوستانی کھلاڑی کسی بھی عالمی چیلنج کا مقابلہ کر سکتے ہیں۔ انہوں نے آئی سی سی چیمپئنز ٹرافی جیتنے پر مردوں کی کرکٹ ٹیم کی دل کھول کر تعریف کی اور کہا کہ اس کامیابی نے ایک بار پھر محدود اوورز کرکٹ میں ہندوستان کی برتری کو ثابت کیا ہے۔ وزیراعظم نے خواتین کی کرکٹ ٹیم کو بھی خصوصی مبارکباد پیش کی، جنہوں نے پہلی بار ورلڈ کپ جیت کر تاریخ رقم کی۔ انہوں نے کہا کہ یہ فتح محض ایک ٹرافی نہیں بلکہ ملک میں خواتین کے کھیلوں کے تئیں اعتماد، احترام اور مواقع میں اضافے کی علامت ہے۔ وزیراعظم نے اس کامیابی کو نوجوان لڑکیوں کے لیے ایک مضبوط پیغام قرار دیا اور کہا کہ آج کھیلوں کے میدان میں بھی خواتین کسی سے پیچھے نہیں ہیں۔ اپنے خطاب میں وزیراعظم نریندر مودی نے ویمن بلائنڈ ٹی 20 ورلڈ کپ جیتنے والی ہندوستانی ٹیم کا خاص طور پر ذکر کیا۔ انہوں نے کہا کہ ان خواتین کھلاڑیوں نے اپنی ہمت، عزم اور محنت سے ناممکن کو ممکن کر دکھایا ہے اور پورے ملک کا سر فخر سے بلند کیا ہے۔ وزیراعظم کے مطابق ان کی کامیابی سماج کے ہر طبقے کے لیے حوصلہ افزا مثال ہے۔ وزیراعظم نے کھیلوں کے مختلف مقابلوں میں ہندوستان کی شاندار کارکردگی کا بھی حوالہ دیا اور کہا کہ ایشیا کپ ٹی 20 خطاب جیتنے کے بعد ترنگا پوری شان و شوکت کے ساتھ لہرایا۔ انہوں

PM hails India's enthusiasm for indigenous products in Mann Ki Baat

NEW DELHI, DEC 28: In the 129th edition of 'Mann Ki Baat', Prime Minister Narendra Modi expressed his pride in the growing enthusiasm across India for indigenous products. Reflecting on the nation's progress in Make in India and Vocal for Local campaigns, he stated that 2025 has provided India with greater self-confidence, particularly in embracing locally made goods: "People are now proudly choosing products made with the hard work of an Indian," said the Prime Minister, emphasizing that this shift is a sign of a stronger, more self-reliant India.

Prime Minister Modi has consistently promoted the vision of an Aatmanirbhar Bharat (Self-Reliant India) and highlighted the importance of Vocal for Local, a national movement that encourages consumers to prioritize domestically produced goods. This initiative is being actively supported by NITI Aayog and aims to strengthen India's economic foundation by empowering local businesses, creating jobs, and enhancing the country's manufacturing capabilities.

During Diwali 2025, a significant initiative was launched under the banner of "Swadeshi Indian Diwali", inspired by PM Modi's call for Swadeshi (local products). Praveen Khandelwal, MP from Chandni Chowk, Delhi, and Secretary General of the Confederation of All India Traders (CAIT), spearheaded the campaign "Bhartiya Samaan -- Hamara Swabhiman" (Indian Goods -- Our Pride). The campaign saw an overwhelming response from consumers and traders alike, with a united push to promote Indian-made products and reject foreign (especially Chinese) goods.

The GST rate reductions introduced by the Modi government have further boosted domestic trade, making Swadeshi products more accessible and affordable. As a result, Chinese goods have largely disappeared from Indian markets during this Diwali season. The "Boycott Chinese Goods" campaign, launched by CAIT in 2021, has evolved into a national movement, with both traders and consumers rallying together to embrace indigenous products and celebrate self-reliance.

This growing trend of supporting Make in India products reflects a significant shift towards economic independence and a collective pride in Indian craftsmanship, setting the stage for a future where India stands strong on its own economic feet.

دیش سال 2025 کی بہت سی حصولیابیوں کو یاد رکھے گا: مودی

'آپریشن سندور' نے دنیا کو دکھا دیا کہ بھارت اپنی حفاظت کیلئے کس حد تک جا سکتا ہے

پردھان منتری نے ماہانہ ریڈیو پروگرام 'من کی بات' کی 129 ویں قسط میں قوم سے کیا خطاب

سال رواں میں آپریشن سندور ہر ہندوستانی کیلئے فخر کی علامت بن گیا

دنیا نے واضح طور پر دیکھا کہ آج کا ہندوستان اپنی سلامتی پر کوئی سمجھوتہ نہیں کرسکتا

سال 2025 نے بہت سے ایسے لمحات دیے جس نے ہر شہری کا سر فخر سے اونچا کیا

قومی سلامتی سے لے کر کھیلوں تک ہندوستان نے اپنا نشان چھوڑا دیا : وزیر اعظم مودی

فرانس میں ملی تصویر نے کشمیر کا شاندار ماضی اجاگر کیا : وزیر اعظم مودی

بارہمولہ کے زینہ پورہ میں دو ہزار سال پرانے بدھ مت اسٹوپے دریافت

World looks at India with hope due to our youth: PM

'Mann Ki Baat': Modi shares how Manipur youth's solar mission lights up homes

New Delhi, Dec. 28 (IANS): In his monthly radio programme 'Mann Ki Baat' on Sunday, Prime Minister Narendra Modi shared the story of Moirangthem Seth, a resident of Manipur, and lauded his efforts in bringing solar power to hundreds of homes across the state.

"There is an old saying: 'Where there is a will, there is a way.' This saying has been proved true once again by a young man from Manipur, Moirangthem Seth. He is less than 40 years old. The remote area of Manipur where Shriram Moirangthem lived had a major electricity problem. To overcome this challenge, he focused on local solutions and found this solution in solar power," PM Modi said.

The Prime Minister said that Manipur has favourable conditions for generating solar energy, and Moirangthem decided to tap into this potential.

"In our Manipur, it is anyway easy to generate solar energy. So, Moirangthem started a campaign to install solar panels, and on account of this campaign, today solar power has reached hundreds of houses in his area," PM Modi said.

He added that Moirangthem's initiative has gone beyond providing electricity to homes and has helped improve essential services and livelihoods.

"The special thing is that he has used solar power to improve health care and livelihood. Today, owing to his efforts, many health centres in Manipur are also getting solar power," the Prime Minister said. He noted that the initiative has had a significant impact on women in the region.

"The women of Manipur have also benefited a lot from this endeavour. Local fishermen and artists have also been helped through this," he added.

The Prime Minister also highlighted the government's flagship rooftop solar scheme. He said that under the PM Surya Ghar Muft Bijli Yojana, the government is providing financial assistance of around INR 75,000 to INR 80,000 to each beneficiary family for installing solar panels.

"While Moirangthem's efforts are personal, they are giving new impetus to every campaign related to solar power. I extend my best wishes to him through Mann Ki Baat," PM Modi said.

PM Surya Ghar Muft Bijli Yojana is a Government of India initiative aimed at providing up to 300 units of free electricity per month to around one crore households by installing rooftop solar panels with government subsidy, thereby reducing electricity bills and enhancing energy self-sufficiency.

Under the scheme, applicants can install solar panels on their rooftops and receive a substantial portion of the installation cost as a subsidy directly into their bank accounts. Beneficiaries can also earn additional income by selling surplus electricity generated from the solar panels back to the power grid.

அறிவியல்-தொழில்நுட்ப சாதனைகளால் உலகை ஈர்க்கும் இந்தியா!

பிரதமர் மோடி பெருமிதம்

நாட்டின் பிற பகுதிகளில் தமிழ் மீதான ஆர்வம் அதிகரிப்பு

Operation Sindoor became a symbol of pride for every Indian: PM

NEW DELHI, DEC 28: Prime Minister Narendra Modi on Sunday recalled the major and historic events that occurred in the country in 2025 and said that this year gave India "even greater self-confidence", while adding that now the nation is ready to move forward in 2026 with new hopes and new resolutions.

Hailing the Indian Armed Forces for their military action against terrorists in May, the Prime Minister said, "This year, Operation Sindoor became a symbol of pride for every Indian. The world clearly saw that today's India does not compromise on its security."

"During Operation Sindoor, pictures of love and devotion towards Maa Bharati emerged from across the nation. People expressed their feelings in

■ Contd. on | P-4 Col 1

'Photograph with Buddhist Stupas found in France reveals Kashmir's glorious past

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said an old, blurry photograph of three Buddhist stupas of Baramulla found in France has revealed Kashmir's glorious past dating back nearly two thousand years.

Modi said large human-made structures were discovered in [illegible] and Kashmir, a development which "will fill you up with pride" regarding its cultural and historical heritage.

For years, people had been seeing some tall mounds in Baramulla's Zehanpora, he said.

These were ordinary mounds, and no one knew what they were and one day, an

■ Contd. on | P-4 Col 1

મન કી બાત કાર્યક્રમમાં વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ મનની ચિંતા વ્યક્ત કરી

એન્ટિ બાયોટિક દવાઓ કમજોર પડી રહી છે તે ચિંતાનો વિષય છે : વડાપ્રધાન મોદી

મન કી બાત કાર્યક્રમમાં વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ આ વર્ષની ભારતની સિદ્ધિઓ પર વાત કરી

| નવી દિલ્હી |

વર્ષ ૨૦૨૫ના આખરી મન કી બાત કાર્યક્રમમાં રવિવારે વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ આ વર્ષની ભારતની સિદ્ધીઓ પર વાત કરી હતી. આ ઉપરાંત વડાપ્રધાને અન્ય ઘણા મુદ્દાઓ પર પણ પોતાનો મત વ્યક્ત કર્યો હતો. આ દરમિયાન વડાપ્રધાને સૌથી મોટી ચિંતા એન્ટી બાયોટિક દવાના ઉપયોગ પર વ્યક્ત કરી હતી. તેમણે જણાવ્યું હતું કે આઈસીએમઆરના રિપોર્ટ અનુસાર બિમારીઓ વિરુદ્ધ તેની ઉપયોગીતા કમજોર થઈ રહી છે. આવું એટલા માટે છે કે આપણા ભારતીયોની અંદર એન્ટી બાયોટિકના ઉપયોગને લઈને ઉદાસિનતા છે. આપણે ડોક્ટરની સલાહ વગર જ ઘણી દવાઓ ખાવા લાગ્યા છીએ. વડાપ્રધાને આગ્રહ કર્યો હતો કે કોઈપણ પ્રકારની દવા ડોક્ટરની સલાહ વગર ખવી જોઈએ નહીં. વડાપ્રધાને મન કી બાત કાર્યક્રમની શરૂઆત કરતાં જણાવ્યું હતું કે થોડા દિવસોની અંદર જ ૨૦૨૬નો આરંભ થશે. મનમાં આ વર્ષની અનેક યાદો ઘુમી રહી છે. અનેક સિદ્ધીઓ એવી છે કે જેણે સમગ્ર દેશને એક સાથે જોડી દીધો અને ગર્વ કરવાની તક આપી હતી.

વડાપ્રધાને ઓપરેશન સિંદૂરને યાદ કર્યું

પીએમ મોદીએ ઓપરેશન સિંદૂરનો ઉલ્લેખ કરતાં જણાવ્યું હતું કે આ વર્ષે ઓપરેશન સિંદૂરે દરેક

ભારતીયને ગર્વ કરાવ્યો હતો. સમગ્ર દુનિયાએ જોયું કે આજે ભારત પોતાની સુરક્ષા સાથે કોઇ સમજુતિ કરતું નથી. ઓપરેશન સિંદૂર દરમિયાન દુનિયાના દરેક ખૂણામાં ભારત માતા પ્રત્યે પ્યાર અને ભક્તિની તસવીરો સામે આવી. વડાપ્રધાને વિશ્વ કપમાં પુરુષ અને મહિલા ક્રિકેટ ટીમની સિદ્ધીને પણ બિરદાવી હતી. તેમણે વિજ્ઞાન અને અંતરિક્ષ ક્ષેત્રમાં ભારતની સિદ્ધીની પણ પ્રસંશા કરી હતી. આ વર્ષે આયોજીત કુંભ મેળાનો ઉલ્લેખ કરતાં વડાપ્રધાને જણાવ્યું હતું કે આ ભવ્ય આયોજને દુનિયાને આશ્ચર્ય ચકિત કરી દીધી હતી.

PM Modi says traditional arts empowering society, becoming vehicle for economic progress

NEW DELHI, December 28 (IANS): Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that India's traditional arts are empowering society and emerging as a major vehicle for people's economic progress, citing inspiring examples from Andhra Pradesh and Manipur while highlighting the role of women-led initiatives.

Addressing the 129th episode of his monthly radio programme "Mann Ki Baat", the Prime Minister said he wanted to share stories of individuals, especially women, who have taken the lead in promoting culture and art while generating employment through these efforts.

"Our traditional arts are empowering society and becoming a major vehicle for people's economic progress. The lace craft of Narasapuram district in Andhra Pradesh is gaining popularity across the country. This lace craft has been in the hands of women for generations. The women of the country have preserved it with great patience and meticulousness," PM Modi said.

He added that the tradition is now being carried forward with a new dimension, as the Andhra Pradesh government and NABARD are jointly teaching artisans new designs, providing better skill training and connecting them with new markets.

"The Narasapuram Lace has also received the GI Tag. Today, more than 500 products are being made from it, and approximately one lakh women in more than 250 villages are getting employment from it," he said.

The Prime Minister noted that Mann Ki Baat also serves as a platform to "bring forward such people who, through their hard work, are not only promoting traditional arts but are also empowering the local people through it."

He then spoke about the efforts of Margaret Ramtharsiem from Churachandpur in Manipur.

"The efforts of Margaret Ramtharsiem of Churachandpur, Manipur, are also of a similar kind. She saw Manipur's traditional products, its handicrafts, and items made from bamboo and wood, with a broad vision.

Because of that vision, from a handicraft artist, she became a medium for transforming people's lives. Today, Margaret's unit employs over 50 artists, and through her hard work, she has developed a market for her products in several states across the country, including Delhi," he said.

PM Modi also shared another example from Manipur, that of Chokhone Krichena from Senapati district, whose family has long been involved in traditional farming.

"Krichena expanded this traditional experience to a greater extent. She made floriculture her passion. Today, she connects this work

■ Contd. on page 2

PM highlights Manipuri man's effort to resolve electricity problem through solar energy

New Delhi, Dec 28 (PTI) Prime Minister Narendra Modi on Sunday highlighted a Manipuri man's effort to bring electricity to his remote village, describing how he found the solution in solar power that brought light to hundreds of houses in the area.

Talking about Shriram Moirangthem in his monthly radio address 'Mann Ki Baat', Prime Minister Modi said the 40-year-old man has once again proved true the old saying 'where there is a will, there is a way' when he resolved the major electricity problem in his area in Manipur.

To overcome the challenge of ensuring a regular supply of electricity, Moirangthem focused on local solutions. "In our Manipur, it is anyway easy to generate solar energy. So, Moirangthem started a campaign to install solar panels and on account of this campaign, today solar power has reached hundreds of houses in his area," the prime minister said.

Modi said the special thing is that Moirangthem has used solar power to improve health care and livelihood.

"Today, owing to his efforts, many health centres in Manipur are also getting solar power. The women of Manipur have also benefited a lot from this endeavour. Local fishermen and artists have also been helped through this," he said.

The prime minister also talked about his government's flagship programme to provide solar power to households. He said that under the 'PM Surya Ghar Muft Bijli Yojana', the government is providing approximately Rs 75,000 to Rs 80,000 to each beneficiary family for installing solar panels.

"While Moirangthem's efforts are personal, they are giving new impetus to every campaign related to solar power. I extend my best wishes to him through 'Mann Ki Baat'," he said.

MANN KI BAAT

Prime Minister says 2025 year of proud milestones for India

Says world looking at India with great hope due to 'youth power'

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday used his final Mann Ki Baat address of 2025 to reflect on what he described as a year marked by significant milestones across national security, sports, science, culture and youth-led innovation, saying the country was closing the year with greater confidence and a sense of readiness for the future.

"TODAY, THE WORLD IS LOOKING AT INDIA WITH GREAT HOPE. THE BIGGEST REASON FOR HOPE IN INDIA IS OUR YOUTH POWER"

Calling 2025 a year in which India's presence was felt across multiple global and domestic arenas, Modi said achievements during the year demonstrated the country's growing strength and resolve. He pointed to Operation Sindoor as a defining moment, saying it emerged as a symbol of national pride and conveyed a clear message about India's security priorities.

India carried out precision strikes under Operation Sindoor on May 7, targeting terror infrastructure in Pakistan, following the April 22 terror attack in Pahalgam that left 26 people dead. An understanding to end the military

Continued on P4

سال کا آخری 'من کی بات' پروگرام

2025 فخر کی علامت ثابت

آپریشن سندور میں سرحد پار دہشت گردی کے بنیادی ڈھانچے کو تباہ کر دیا: وزیر اعظم

ऑपरेशन सिंदूर, शुभांशु, महाकुंभ का ज़िक्र, मन की बात में मोदी ने गिनाईं 2025 की उपलब्धियां

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

2025 भारत के लिए गौरव और आत्मविश्वास का साल। - नरेन्द्र मोदी

खेलों का भी यादगार साल:

विज्ञान और स्पेस के क्षेत्र में भी गौरव:

युवा शक्ति के कारण दुनिया भारत की ओर बड़ी उम्मीदों से देख रही : मोदी

बिजली की समस्या दूर करने के मणिपुरी व्यक्ति के प्रयासों को सराहा

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी के विस्तार के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों ने दुनिया भर के देशों को बहुत प्रभावित किया है और 'युवा शक्ति' के कारण पूरी दुनिया देश की ओर बड़ी उम्मीदों से देख रही है। मोदी ने अपने मासिक 'मन की बात' संबोधन में कहा कि आज दुनिया भारत को बहुत आशा के साथ देख रही है। भारत से उम्मीद की सबसे बड़ी वजह है, हमारी युवा शक्ति। विज्ञान के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियां, नए-नए नवोन्मेष, प्रौद्योगिकी का विस्तार इनसे दुनियाभर के देश बहुत प्रभावित हैं। मोदी ने कहा कि भारत के युवाओं में हमेशा कुछ नया करने का जुनून है और वो उतने ही जागरूक भी हैं। मेरे युवा साथी कई बार मुझसे यह पूछते हैं कि राष्ट्र निर्माण में वो अपना योगदान और कैसे बढ़ाएं? वो कैसे अपने विचार साझा कर सकते हैं। कई साथी पूछते हैं कि मेरे सामने वो अपने विचार को कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं? उन्होंने कहा कि हमारे युवा साथियों की इस जिज्ञासा का समाधान है 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग'। उन्होंने कहा कि पिछले साल इसका पहला संस्करण आयोजित हुआ था और अब कुछ दिन बाद उसका दूसरा संस्करण आयोजित होने वाला है। उन्होंने कहा कि अगले महीने की 12 तारीख को स्वामी विवेकानंद ■ शेष पृष्ठ 11 पर

ಬೆಂಗಳೂರು ಐಐಎಸ್ಸಿ ಸಂಗೀತ ತರಗತಿಗೆ ಪ್ರಧಾನಿಗಳ ಪ್ರಶಂಸೆ

ವಿಜ್ಞಾನ ಯುಗದಲ್ಲೂ ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಬೇರು ಗಟ್ಟಿ ಇದಕ್ಕೆ 'ಗೀತಾಂಜಲಿ ಐಐಎಸ್ಸಿ' ಸಂಗೀತ ಕ್ಲಾಸ್ ನಿದರ್ಶನ

ನವದೆಹಲಿ: 'ಇಂದು ತಂತ್ರಜ್ಞಾನ ವೇಗವಾಗಿ ಬೆಳೆದು, ರೋಬೋಟ್‌ಗಳು ಮನುಷ್ಯರ ಸ್ಥಾನ ಆಕ್ರಮಿಸಬಹುದು ಎಂದು ಕೆಲವರು ಕಳವಳ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಂತಹ ಬದಲಾಗುತ್ತಿರುವ ಕಾಲದಲ್ಲೂ ನಮ್ಮ ಮುಂದಿನ ಪೀಳಿಗೆಯು ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಬೇರುಗಳನ್ನು ಹೊಸ ಚಿಂತನೆ ಮತ್ತು ಹೊಸ ವಿಧಾನಗಳೊಂದಿಗೆ ಭದ್ರವಾಗಿ ಸಂರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ಕಂಡು ನನಗೆ ತುಂಬಾ ಸಂತೋಷವಾಗಿದೆ' ಎಂದು ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ ಹಾಗೂ ಇದಕ್ಕೆ ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಭಾರತೀಯ ವಿಜ್ಞಾನ ಸಂಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿನ (ಐಐಎಸ್ಸಿ) 'ಗೀತಾಂಜಲಿ ಐಐಎಸ್ಸಿ' ಎಂಬ ಸಂಗೀತ ತರಗತಿಯ ಉದಾಹರಣೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ.

ತಮ್ಮ ಮಾಸಿಕ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡಿದ ಮೋದಿ, 'ನೀವು ಇಂಡಿಯನ್ ಇನ್‌ಸ್ಟಿಟ್ಯೂಟ್ ಆಫ್ ಸೈನ್ಸ್ (ಐಐಎಸ್ಸಿ) ಹೆಸರನ್ನು ಕೇಳಿರಬಹುದು. ಕೆಲವು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಅಲ್ಲಿನ ಕೆಲವು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ಅಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಯ ನಡುವೆ ಸಂಗೀತಕ್ಕೂ ಸ್ಥಾನ ನೀಡಬೇಕು ಎಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಟ್ಟರು. ಅಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪುಟ್ಟ ಸಂಗೀತ ತರಗತಿ ಪ್ರಾರಂಭವಾಯಿತು. ದೊಡ್ಡ ವೇದಿಕೆಯೂ ಇಲ್ಲ, ದೊಡ್ಡ ಬಜೆಟ್ ಕೂಡಾ ಇಲ್ಲ, ಕ್ರಮೇಣ, ಈ ಉಪಕ್ರಮ ಬೆಳೆಯುತ್ತಾ ಸಾಗಿತು ಮತ್ತು ಇಂದು ನಾವು ಇದನ್ನು 'ಗೀತಾಂಜಲಿ ಐಐಎಸ್ಸಿ' ಎಂದು ಗುರುತಿಸುತ್ತೇವೆ' ಎಂದರು.

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਵਿਚ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮੋਦੀ ਨੇ ਕਿਹਾ

2025 ਭਾਰਤ ਲਈ ਮਾਣਮੱਤੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ ਦਾ ਸਾਲ ਰਿਹਾ

ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ, 28 ਦਸੰਬਰ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ 2025 ਭਾਰਤ ਲਈ ਮਾਣਮੱਤੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ ਦਾ ਸਾਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 'ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਸੰਧੂਰ' ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ

"'ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਸੰਧੂਰ' ਹਰ ਭਾਰਤੀ ਲਈ ਮਾਣ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਨੇ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਵਿਖਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਆਪਣੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸਮਝੌਤਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ"

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੌਰਾਨ ਦੇਸ਼ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮੋਦੀ।

— ਬਾਕੀ ਸਫ਼ਾ 7 'ਤੇ

मस्ट READ

डॉक्टरांच्या सल्ल्याशिवाय 'अँटीबायोटिक्स' घेऊ नका, पंतप्रधानांनी 'मन की बात'मध्ये केले कळकळीचे आवाहन

लोकमत न्यूज नेटवर्क

नवी दिल्ली: पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी त्यांच्या 'मन की बात' या रेडिओ कार्यक्रमाद्वारे 'अँटीबायोटिक रेझिस्टन्स' (प्रतिजैविक प्रतिरोध) या विषयावर चिंता व्यक्त केली आहे. डॉक्टरांच्या सल्ल्याशिवाय अँटीबायोटिक्स घेणे ही एक गंभीर समस्या बनत असून, नागरिकांनी स्वतःच्या मनाने औषधे घेणे टाळावे, असे कळकळीचे आवाहन त्यांनी केले आहे.

पंतप्रधानांनी भारतीय आयुर्विज्ञान संशोधन परिषदेच्या (आयसीएमआर) एका ताज्या अहवालाचा दाखला दिला.

अँटीबायोटिक सामान्य आजारांवर आता निकामी

पंतप्रधान म्हणाले, या अहवालानुसार, निमोनिया आणि मूत्रमार्गाचे संसर्ग सारख्या आजारांवर आता अँटीबायोटिक औषधे निकामी ठरत आहेत.

औषधे प्रभावी न ठरण्याचे सर्वात मोठे कारण म्हणजे लोकांकडून होणारा या औषधांचा अंधाधुंद आणि चुकीचा वापर, म्हणून मनाने औषध घेणे टाळा, असे पंतप्रधान म्हणाले.

'...तर अँटीबायोटिक्सला डॉक्टरांची गरज'

❶ पंतप्रधान म्हणाले की, "आजकाल लोकांना असे वाटू लागले आहे की एखादी गोळी घेतली की सर्व समस्या सुटतील. पण यामुळेच संसर्ग आणि आजार या औषधांपेक्षा जास्त ताकदवान होत आहेत. अँटीबायोटिक्स ही काही अशी औषधे नाहीत जी कोणताही विचार न करता घेतली जावीत."

❷ त्यामुळे 'औषधांना मार्गदर्शनाची गरज असते, व अँटीबायोटिक्सला डॉक्टरांची' हा मंत्र तुमच्या आरोग्यासाठी अत्यंत फायदेशीर ठरेल.

२०२५ हे अभिमानास्पद कामगिरीचे वर्ष होते

२०२५ मध्ये देशाच्या सुरक्षेपासून ते क्रीडा क्षेत्रापर्यंत, विज्ञान प्रयोगशाळांपासून ते जगातील प्रमुख व्यासपीठापर्यंत भारताने सर्वत्र एक मजबूत छाप सोडली.

'ऑपरेशन सिंदूर' प्रत्येक भारतीयासाठी अभिमानाचे प्रतीक बनले. जगाने स्पष्टपणे पाहिले की, आजचा भारत सुरक्षेशी तडजोड करत नाही. 'ऑपरेशन सिंदूर' दरम्यान, देशभरातून लोकांनी त्यांच्या भावना त्यांच्या पद्धतीने व्यक्त केल्या, असे पंतप्रधान म्हणाले.

फ्रांस में मिली बौद्ध स्तूपों वाली तस्वीर कश्मीर के गौरवशाली अतीत को पेश करती हैं : प्रधानमंत्री मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को एंटीबायोटिक दवाओं के अंधाधुंध इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी दी

'ऑपरेशन सिंदूर' देशाच्या अभिमानाचे प्रतीक

पंतप्रधानांची 'मन की बात' : २०२५ मधील घटनांचा घेतला आढावा, नववर्षाचा संकल्पही विषद

PM Modi lauds state entrepreneurs in Mann Ki Baat

CHRONICLE NEWS SERVICE

Moirangthem Seth | Margaret Ramtharsiem | Chokhone Krichena

TRANSISTORS SMASHED IN JUNE 2023 AS PM MODI SKIPPED MANIPUR CRISIS

IMPHAL: Prime Minister Narendra Modi highlighted three grassroots change-makers from Manipur in his latest Mann Ki Baat address on Sunday, recognising their efforts in solar energy, handicrafts and floriculture as examples of innovation and self-reliance transforming communities.

Moirangthem Seth, who brought solar power to remote areas of Manipur, received special mention from the Prime Minister. "There is an old saying: 'Where there is a will, there is a way'. This saying has been proved true once again by a young man from Manipur, Moirangthem Seth," Modi said. "The remote area of Manipur where Moirangthem Seth lived had a major electricity problem. To overcome this challenge, he focused on local solutions and found this solution in solar power."

Seth, who founded SNS Energy Solutions Ltd in 2015, has brought clean, affordable electricity to thousands of households across the state's remote hilly areas and fishing communities on Loktak lake islands. The arts graduate from Manipur University received technical training from the Selco Foundation in Bengaluru after realising during travels to Ukhrul, Tamenglong and Senapati how residents struggled without access to power.

Speaking to IANS, Seth expressed gratitude for the recognition. "I feel extremely happy and grateful. It shows that even a simple idea can make a big impact on people's lives," he said, adding that the acknowledgment demonstrates how small initiatives can bring meaningful change.

Seth's initiative complements government schemes like PM Surya Ghar Yojana. "Our solution is focused on remote areas and healthcare centres lacking proper electricity. PM Surya Ghar mainly addresses rural households with existing grid connections," he explained. "Both approaches complement each other, working towards a single vision, power for every home and community."

The Prime Minister also recognised Margaret Ramtharsiem of Churachandpur for transforming traditional handicrafts into sustainable livelihoods. "Mann Ki Baat is also a platform to bring forward such people who, through their hard work, are not only promoting traditional arts but are also empowering the local people through it," Modi stated. "She saw Manipur's traditional products, its handicrafts, and items made from bamboo and wood, with a broad vision. Because of that vision, from a handicraft artisan she became a medium for transforming people's lives."

Margaret Ramtharsiem's unit now employs over 50 artisans, with products reaching markets across India, including Delhi.

Speaking to IANS, Margaret connected her work to the Atmanirbhar Bharat vision. "I have always wanted to be self-reliant, and the Atmanirbhar Bharat vision gives me the energy and motivation to work more, involve more local artisans, and strengthen self-reliance in our communities," she said.

CONTD P5

ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ವರ್ಣನೆ | ಆಪರೇಷನ್ ಸಿಂಧೂರ ಪ್ರಸ್ತಾಪ

ಭದ್ರತೆ, ಕ್ರೀಡೆ, ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಪ್ರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಮಹತ್ವದ ವರ್ಷ

ವಂದೇ ಮಾತರಂ

ऑपरेशन सिंदूर देश के गर्व का प्रतीक बना: पीएम

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में 2025 की उपलब्धियां गिनाईं

■ कहा: अब हम नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ने को तैयार

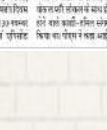

■ 2025 भारत के लिए गर्व भरे मील के पत्थरों का साल था

ಮೋದಿ ವರ್ಷದ ಕಡೆಯ 'ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್' ಆಪರೇಷನ್ ಸಿಂಧೂರ್, ಕ್ರಿಕೆಟ್ ಉಲ್ಲೇಖ

ದೇಶದ ಯುವ ನಾಯಕರ ಜತೆ ಸಂವಾದಕ್ಕಾಗಿ ಕಾತುರ

आज तक

राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता और आत्मविश्वास से भरा 2025... PM मोदी ने 'मन की बात' में गिनाई देश की उपलब्धियां

ETV Bharat

'آپریشن سندور ملک کا فخر بن گیا'، من کی بات پروگرام میں سال 2025 کی 'کامیابیوں' کا تذکرہ

THE FREE PRESS JOURNAL

Mann Ki Baat: PM Modi Highlights India's Global Impact Through Youth, Science, & Innovation

Hindustan Times

Modi flags antibiotic misuse in Mann Ki Baat, doctors welcome message, warn of growing resistance

हिन्दुस्तान

एंटी बायोटिक दवाइयां पड़ रही कमजोर; मन की बात कार्यक्रम में पीएम मोदी ने जताई चिंता

LATESTLY

'Mann Ki Baat' Reveals How Blurred Photos in French Museum Brought Forgotten Buddhist Ruins in Jammu and Kashmir Village to Life

LOKMAT TIMES

डॉक्टरांच्या सल्ल्याशिवाय 'अँटीबायोटिक्स' घेऊ नका, पंतप्रधानांनी 'मन की बात'मध्ये केले कळकळीचे आवाहन

NDTV

भारत ने साइंस और स्पेस के क्षेत्र में बड़ी छलांग लगाई...मन की बात में पीएम मोदी

NET Northeast Today

Manipur Solar Entrepreneur Moirangthem Seth Praised By PM Modi On Mann Ki Baat

THE HINDU

Mann Ki Baat: World looking at India with great hope due to 'youth power', says PM Modi

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM pays tribute to Odisha's Parbati Giri, freedom fighter and social reformer in Mann ki Baat

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

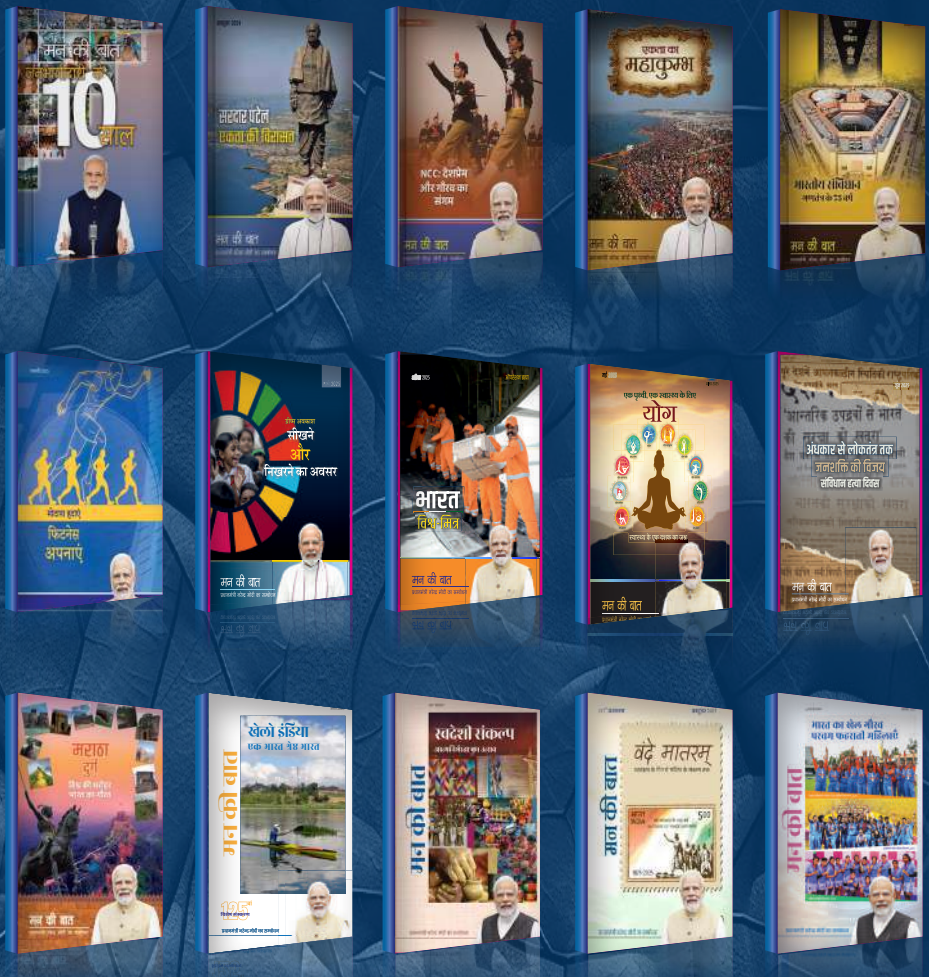

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

2025 ने हमें ऐसे कई पल दिए जिन पर हर भारतीय को गर्व हुआ। देश की सुरक्षा से लेकर खेल के मैदान तक, विज्ञान की प्रयोगशालाओं से लेकर दुनिया के बड़े मंचों तक। भारत ने हर जगह अपनी मजबूत छाप छोड़ी।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार